হোসিয়ারী বিপণি উদ্বোধনের পর পশ্চিমবঙ্গের শিল্পমন্ত্রী ... মজুমদার জনসেবক হোসিয়ারীর প্রস্তুত দ্রব্যাদি দেখিতেছেন।

উত্তর বিহারে প্রবল বৃষ্টি

কাটিহার সহরের কোন অংশ জলমগ্ন

(নিজস্ব সংবাদদাতা প্রেরিত)

কাটিহার, ১৭ই সেপ্টেম্বর—গত ৭২ ঘণ্টা যাবৎ উত্তর বিহারের বৃহত্তর অংশ এবং পশ্চিম দিনাজপুর ও মালদহ জেলার কতক অংশে প্রবল বাত্যা সহ অবিরাম প্রবল বৃষ্টি হইয়াছে। ইহার ফলে নীচু জায়গাগুলি জলমগ্ন হওয়ায় অধিবাসীদের দারুণ দুর্দশা ঘটিয়াছে। স্থানীয় টেলিগ্রাফ আফিস ও শাক-সব্জী বাজারে এক হাঁটু জল হইয়াছে। রেলপথ ডুবিয়া যাওয়ায় সমস্ত ট্রেণের চলাচল বিলম্ব ঘটিতেছে। বৈদ্যুৎ সরবরাহ বিপর্যস্ত হওয়ায় সমগ্র কাটিহার সহর গত রাত্রিতে দীর্ঘকাল অন্ধকারাচ্ছন্ন ছিল।

কাটিহার ও আমনুরার মধ্যে খ্রু ট্রেণ চলাচল

সত্বর পুনরায় আরম্ভ হওয়ার সম্ভাবনা

(নিজস্ব সংবাদদাতা প্রেরিত)

কাটিহার, ... সেপ্টেম্বর— ... বৎসর পর গোদাগাড়ীঘাট শাখার ...

কাম্বে এবং অন্য... তৈলানুসন্ধান

সাংবাদিক বৈঠকে শ্রী মালব্যের বিবৃতি

কাম্বে, ১৮ই সেপ্টেম্বর—কেন্দ্রীয় তৈল দপ্তরের ভারপ্রাপ্ত কেন্দ্রীয় ... শ্রী কে ডি মালব্য ... এক সাংবাদিক বৈঠকে বলেন ... অববাহিকায় তৈলানুসন্ধানের ... জোরদার করা হইবে এবং দেশের ... স্থানে তৈল অনুসন্ধান চালান ... হইবে।

শ্রী মালব্য বলেন, ... তৈল অনুসন্ধানের কাজ ... হোসিয়ারপুর ও শিবসাগরে তৈল... সন্ধানের কাজ অনেকদূর ... হইয়াছে। গাঙ্গের উপত্যকাতে ... অনুসন্ধানের কাজ চলিতেছে।

কাম্বেতে প্রথম তৈলকূপ ... আমরা যে তথ্য সরবরাহ ... তাহাতে এই অঞ্চলে তৈলানুস... ব্যাপারে আমরা উৎসাহিত হইয়াছি ...

তিনি বলেন, কাম্বেতে তৈ... সন্ধানের কাজ দ্রুত অগ্রসর হ... এবং এই কাজ শেষ করিতে তি... ...

জঙ্গীপুরে একদল বুভুক্ষু নরনারী

মহকুমা শাসকের নিকট দাবী পেশের জন্য আগমন

রঘুনাথগঞ্জ (মুর্শিদাবাদ), ১৫ই সেপ্টেম্বর—সাগরদীঘি থানার বিভিন্ন গ্রাম হইতে সমাগত একদল বুভুক্ষু নরনারী ...

... হোসি...রী বিপণি

...জ কর্পো-... জনসেবক ... হোসিয়ারী ... পার্ক স্ট্রীটে ... সার বাণিজ্য ... বিপণির উদ্বোধন ... সভাপতিত্ব করেন

উ ... প্রত্যহ : ২॥, ৫॥ ও ৮॥টায়

... : টাকা-আনা-পাই

... : সদানন্দের মেলা

... : তাসের ঘর

... : রাইকমল

— ওয়াহিদা

ডিনাঁত

দ্‌, দত্তের

যাই ভি

: রাজ খোসলা

ও পি নায়ার

৩, ৬, ৯

। — হিন্দ (কটক)

হও অম্লান!

নিরবচ্ছিন্ন প্রমোদে

হলে, আজও.........

অবিতীয় প্রমোদের প্রস্রবন!

দোসী ফিল্মসের

চন্দন

শ্রেষ্ঠাংশে : নূতন - কিশোর - মালা সিংহ

প্রাণ - ডেভিড - কে এন সিংহ

রণধীর - কমলা লক্ষ্মণ এবং

জনী ওয়াকার

পরিচালনা : এম ভি রমন

ছায়া ৩, ৬, ৯

লাইট হাউস

প্রত্যহ ৩টা ও ৭॥টায়

এবং রবিবার ও ছুটীর দিন সকাল ১০টায়

শুভ উদ্বোধন ৩রা অক্টোবর

চলচ্চিত্র ইতিহাসের বৃহত্তম ঘটনা!

CECIL B. DEMILLE'S

The Ten Commandments

CHARLTON HESTON · YUL BRYNNER · ANNE BAXTER · EDWARD G. ROBINSON

YVONNE DE CARLO · DEBRA PAGET · JOHN DEREK

SIR CEDRIC HARDWICKE · NINA FOCH · MARTHA SCOTT · JUDITH ANDERSON · VINCENT PRICE

A Paramount Picture TECHNICOLOR

২য় সপ্তাহের টিকিট পাওয়া যাচ্ছে।

উত্তর ও দক্ষিণ বঙ্গের মধ্যে রেলপথ ...

(পঞ্চম পৃষ্ঠার পর)

ভগবানই জানেন। ততদিন পর্যন্ত একদিকে উত্তরবঙ্গ, উত্তর বিহার এবং আসাম এবং অন্যদিকে কলিকাতার মধ্যে অন্য কোন বিকল্প রেলপথ নির্মিত হইবে না।

শ্রীরামস্বামী :—কেন্দ্রীয় জল এবং বিদ্যুৎ কমিশন ফরাক্কা পরিকল্পনা বিবেচনা করিয়া দেখিতেছেন। সদস্যগণ সেচ ও বিদ্যুৎ উৎপাদন মন্ত্রণালয়কে অনুরোধ করিতে পারেন। আমরা এই ৯ মাইল দীর্ঘ রেলপথ নির্মাণ করিতে পারি; কিন্তু তাহাতে নিছক অর্থের অপচয় হইবে মাত্র।

শ্রীমতী রেণু চক্রবর্তী :—উত্তর এবং দক্ষিণবঙ্গের মধ্যে যোগসূত্র স্থাপনের জন্য গবর্ণমেণ্ট কি ব্যবস্থা করিতেছেন। দেশ বিভাগের পর হইতে রাজ্যের এই দুইটি অংশের মধ্যে কোন যোগসূত্র নাই।

শ্রীরামস্বামী :—যথেষ্ট রাস্তা আছে। সড়কযোগে পরিবহন ক্রমেই বৃদ্ধি পাইতেছে। তিলডাঙ্গার সহিত যোগপথ প্রতিষ্ঠার জন্য পশ্চিমবঙ্গ সরকারও একটি নূতন রেলপথ নির্মাণের প্রস্তাব ...

... শের ব্যবস্থা ... রেলের ... ওয়ার্ড বিভাগ ... কোথান ... পারে না। ... জানাইলেন ... এই ... কাজ করিতে হইবে ... অর্থাৎ শ্রী ... একটি ... করা যাইতে পারে। ... নিবারণের জন্য জন-সাধারণের মধ্যে ... করিবার ... সরকার ... সহে না ... রেলে চুরি ডাকাতি ... কর্তৃপক্ষ যে ... করিয়াছেন, ইহার ... সেই সমস্ত ... কাল। তিনি শ্রীইক ...

॥ ॐ तत्सत् ॐ ॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

श्रीमद्भगवत्पाद्

श्री पद्मपादाचार्य विरचितम्

श्री शिवपञ्चाक्षरी भाष्यम्

श्री हरिनामदत्त विरचितया

सुबोधिनी व्याख्यया युतम्

श्रीमद् देशिकस्य यते राज्ञया

श्री वाटूजी इत्यपरनामकेन श्री अग्निष्वात्त शास्त्रिणा

भाषाटीकाया समलंकृतम्

कलकत्ता निवासिना श्रेष्ठिना

श्री विश्वनाथ खेमका इत्यनेन

परमार्थ वृत्त्या मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

सम्वत् २०१५ प्रथमावृत्ति १०००

अधिकारिभ्यः अमूल्य वितरणार्थम्

|| ॐ तत्सत् ||

❀ ॐ नमः शिवाय ❀

प्रास्ताविकम् ||

(युग्मम्)

श्री पञ्चाक्षर - मन्त्र भाष्य - रचना निर्वाण निःश्रेणिका-

श्रीमद्देशिक पद्मपाद मुनिना कारुण्यतो भाविता ||

साश्रीमद् हरिनामदत्त विदुषा सम्भूषिता व्याख्यया-

अग्निष्वात्त समाह्व वाट्ठु विदुषा साऽलंकृता भाषया ||१||

श्रीमत्क्षेमक वैश्य वंशज सुधी श्री विश्वनाथेन सा-

मुद्राप्य प्रकटी कृतां जनहितायैवेश माराधितुम् ||

सा दृष्टा पठिता श्रुताच विधिना भक्त्यादृताचेदृढम्-

निध्याता मननेन मोदमतुलं चित्तेसतामावहेत् ||२||

अर्थ—मुक्ति के सोपान स्वरूप, श्रीपञ्चाक्षर मन्त्र भाष्यकी रचना, अतीव करुणासे, मुमुक्षुजनो के हितार्थ श्रीगुरुचरण पद्मपादाचार्य मुनिने किया। उसकी व्याख्या विद्वद्वर श्री हरिनाम दत्त जी ने किया। उसीका हिन्दी भाषान्तर वाट्ठू जी नामसे प्रसिद्ध श्री अग्निष्वात्त ने किया। धर्म्म बुद्धि सम्पन्न, वैश्यकुलोत्पन्न श्री विश्वनाथ जी खेमका ने सज्जनों के हितार्थ उसको प्रकट किया। इसकी विधि से भक्ति और आदर पूर्वक पाठ करने से, श्रवण करने से, दर्शन करने से, मनन करने से, ध्यान करने से सज्जनों के चित्त में अनुपम आनन्द होगा।

(गुरु जी का आशीर्वचनश्लोक है)

ॐ तत्सत् ॐ

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

❋ प्रस्तावना ❋
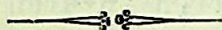
ईश्वरके लीलामय इस संसार में, सर्व प्राणियोंकी स्वाभाविक प्रवृत्ति सुख शान्ति और उनके साधनों में सामान्य रूप से देखी जाती है। जिससे आपाततः विना सोचे समझे देखे सुने विषयमें स्वयं आपही प्रवृत्त हो जाते हैं। उनमें से किसीको प्रारब्ध वशात् काकतालीय न्यायसे फलसिद्धि प्रतीत होती है; सोभी, विवेक विचार विना, निश्चय न होने से अशान्ति सी रहती है। इससे विशेष रूपसे विशिष्ट सदाचारी निष्कारण करुणावान्, परमार्थ परायण, निष्काम, सत्पुरुषोंका आश्रय करे; और उनके अनुभूत साधनोंका तथा उपदेशों का और उनके रचित ग्रन्थों का श्रवण, मनन, निदिध्यासन, शास्त्र विधिसे करनेसे, विशेष लाभ होता है; किन्तु उसमें विशेष समय और अभ्यास की आवश्यकता है। जिनको इतना समय नहीं है, वैसे मनुष्यों के लिए दयासागर महात्माओंने, सर्वसाधारणजनके हितकारी, सुगमतासे समझमें आवे ऐसे परमार्थ मार्ग के पथप्रदर्शक ग्रन्थ रचे हैं। जो ग्रन्थ स्वरूपसे तो छोटे हैं किन्तु स्वर्गकी सीढ़ी सरीखे अनायास उच्च पद पर पहुँचाते हैं; जिससे लौकिक कथन "गागर में सागर" की चरि-

तार्थता होती है। इस प्रकार का यह ग्रन्थ है। लोकोपकार दृष्टि से ही पूर्व महानुभावों ने इसका प्रकाशन किया था। किन्तु वर्त्तमान कालमें इसकी अप्राप्ति, और संस्कृत न जानने वालों को दुर्लभता प्रतीत होनेसे, जो मूलग्रन्थ और व्याख्या संस्कृत में थी—उसका हिन्दी भाषामें भाषान्तर करके प्रकट करने का प्रयत्न किया है।

इस ग्रन्थका प्रतिपाद्य विषय सोपाधिक निरुपाधिक ब्रह्म होनेसे कर्म्मी, उपासक, ज्ञानी, सबके लिए उपादेय है। और ब्रह्म कारण होनेसे, अन्य मतमतान्तर को भी अवकाश नहीं है। सम्पूर्ण ब्रह्मसूत्र वेदान्त दर्शनका अध्याय-पाद-अधिकरणोंका तात्पर्य भी इनमें दर्शाया है जिससे सुज्ञ जनों का आदरणीय है। विशेषज्ञों के लिए तो—उपनिषदादि वेदान्त ग्रन्थ और श्रीभगवान् भाष्यकारादि कृत प्रकरण ग्रन्थ पूर्ण हैं। सामान्य संस्कृतज्ञों के लिए भी पण्डितोंकी कीहुई टीका टिप्पणियाँ पर्याप्त हैं। सर्वसाधारण के लिए ऐसे छोटे छोटे प्रकरण ग्रन्थ उपयोगी हैं। उनकाभी हिन्दी अनुवाद होवे तो विशेष लाभदायी हो ऐसी अनेक सज्जनोंकी अभिलाषासे हिन्दी भाषान्तर सहित प्रकट किया गया है।

पर पदकी प्राप्तीका साधन त्याग है। श्रुतिस्मृति पुराणों में उसका प्राधान्य है। "नकर्मणा .... त्यागेनैके" इत्यादि श्रुति; "त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्" इत्यादि स्मृति है। सर्व-धर्म सिद्धान्तोंमें उसकीही प्रशंसा है। इस ग्रन्थ का आरम्भ त्यागसे ही होता है। और सब विशेषताएं ग्रन्थके अवलोकनसे ही ज्ञात होंगी।

इस ग्रन्थ के रचयिता भगवत्पाद श्री आद्यशंकराचार्यजी के पट्ट शिष्य श्री पद्मपादाचार्यजी हैं । स्वनाम धन्य सारस्वत पण्डित श्री हरिनामदत्त शास्त्रीजी की उस पर सुबोधिनी व्याख्या है । इनका ही हिन्दी भाषान्तर–काशीके चतुर्वेद पाठी–बादू शास्त्री नामसे प्रसिद्ध अग्निष्वात्त शास्त्री ने किया है। जिसका परमार्थ दृष्टिसे वैश्यजातीय खेमकावंशज विश्वनाथ सेठजी ने प्रकाशन किया है । यह सबको शान्तिप्रद हो इति शिवम् ॥

[गुरुजी का यह प्रस्तावना रूप आशीर्वाद है ।]
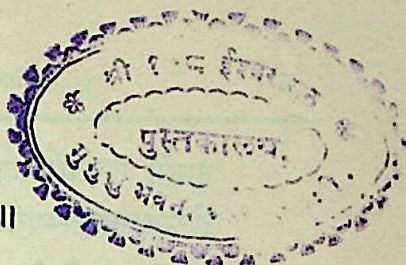
॥ ॐ तत्सत् ॥

❀ ॐ नमः शिवाय ❀

अथ श्री भगवत्पाद श्री पद्मपादाचार्य प्रणीतम् ।

॥ श्रीशिवपंचाक्षरी भाष्यम् ॥
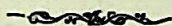
त्यागोहि नमसो वाच्यः आनन्दः प्रकृतेस्तथा ।
फलं प्रत्यय वाच्यंस्यात्त्याज्यं पत्रफलादिकम् ॥१॥

त्यजामीदमिदं सर्वं चतुर्णामिह सिद्धये ।
अथवा नमसोवाच्यः प्रणामो दैन्य लब्धये ॥२॥

दैन्यं सेवा तथाज्ञप्तिः सिद्धिः सर्वस्य वस्तुनः ।
नमामि देव देवेशं सकामोऽकाम एव वा ॥३॥

नजा निषिध्यते भावविकृतिर्जगदात्मनः ।
मसनं देवदेवेश नेहनानास्ति शब्दतः ॥४॥

अयेति गमयेत्यर्थे तस्माच्छुद्धोऽस्मि नित्यशः ।
प्रणामो देहगेहादे रभिमानस्य नाशनम् ॥५॥

शिवोब्रह्मादि रूपः स्याच्छक्तिभिस्तिसृभिःसह ।
अथवातुर्यमेवस्या त्रिर्गुणं ब्रह्म तत्परम् ॥६॥

नमसो नमनेशक्तिर्नमनं ध्यानमेवच ।
ङेऽन्तात्तादात्म्यसंबन्धः कथ्यते प्रत्यगात्मनोः ॥७॥

अहंशिवः शिवोऽहंच मन्ये वेदान्तनिष्ठया ।
इत्येवं नम इत्युक्तं वेदैः शास्त्रैश्च सर्वशः ॥८॥

अथवा दास एवाह महंदास इतीरणम् ।
इत्येव नम इत्युक्तं वेदैः शास्त्रैश्च सर्वशः ॥९॥

अथवेदमिदं सर्वं त्यजामि परमाप्तये ।
अर्थं धर्म्मं च कामं च वाञ्छैश्च जगदीश्वरम् ॥१०॥

एतन्मन्त्रार्थतत्वज्ञैर्वेदवेदान्त तत्परैः ।
निर्णीतं तत्त्व गर्भं यद विज्ञेयं मुक्ति लब्धये ॥११॥

अथवा मुक्तिलाभाय ध्येयं तत्त्वं विवेकतः ।
भिन्नं बुध्वा हृदादेवं मन्त्रेणेशंजगद्गुरुम् ॥१२॥

नमेरचि नमः प्रोक्तोजन्तास्याज्जगदीश्वरे ।
तस्मादासोऽह मित्येवं मत्त्वामां प्रापयात्मनि ॥१३॥

अस्मिञ्छेते जगत्सर्वं तन्मयं शब्दगामियत् ।
तद्वानाच्छिव इत्युक्तं कारणं ब्रह्मतत्पराः ॥१४॥

नमायस्यास्तिलक्ष्मीश्च सोऽहंदेवो न संशयः ।
तस्मान्मे प्रापये हैव लक्ष्मीं विद्यां सनातनीम् ॥१५

यस्मादानन्दरूपस्त्वं देवैर्वेदैर्निगद्यसे ।
तस्मान्मे देहि योगीश भद्रंज्ञानं सुभावनम् ॥१६॥
यस्मात्त्वं नेतिनेतीति नञर्थं मासिवेदजम् ॥
तस्मान्नमोसि भद्रं मे यतोजातोऽनमोनमः ॥१७॥
शिवं शिव मथाप्राप्तः शिवायेतिनिगद्यसे ।
शिवायमे तथाप्राप्त्या शिवायं कुरु सर्वथा ॥१८॥
शिवांयातो महाभद्र नमोऽहं माययाध्रुवम् ॥
ततो नमाय मह्यं मः शिवायं कुरु सर्वथा ॥१९॥
शिवमेपि यतोज्ञप्त्या शिवायस्त्वं प्रपठ्यसे ।
नतेमाया यतोज्ञप्त्या नमोवेदैः प्रपठ्यसे ॥२०॥
नमोऽहंच शिवायोहं नमो मह्यं नमोनमः ।
नमोनमाय शुद्धाय मंगलाय नमोनमः ॥२१॥
नमोनमसनं शम्भो निराकाराय ते नमः ।
निर्गुणं निष्क्रियंशान्त मित्याद्याःश्रुतयोजगुः ॥२२॥
नमोब्रह्म निराकारं शिवायं शिव सर्वदा ।
अतोऽहंच नमाभद्र शिवायोऽहं न संशयः ॥२३॥

॥ इतिश्रीशिवपंचाक्षरी भाष्यम् ॥

❀ ॐ नमः शिवाय ❀

* श्रीशिवपञ्चाक्षरी भाष्यम् *

॥ ॐ अदृष्टपुरुशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीशारदायै नमः ॥

नत्वा साम्बशिवं प्रीत्या विद्वदानन्ददायिनीम् ।
शिवपंचाक्षरी भाष्य व्याख्यां कुर्वेसुबोधिनीम् ॥

श्री शिव पार्वती को प्रणाम करते हुए विद्वानों को आनन्द देने वाली शिव पंचाक्षरी भाष्य की सुबोधिनी नामक व्याख्या करता हूँ।

श्रीमद्भगवान् पद्मपादाचार्यो, भाष्यकाराणां मुख्यः शिष्यः सकल मुमुक्षु जन हितार्थाय शारीरक सूत्र भाष्य विचारासमर्थानां च श्रीमत्परमहंस परिव्राजक श्रीमद् भगवत् पाद श्रीशंकराचार्य प्रणीत शारीरक सूत्र भाष्य संक्षिप्त तात्पर्यांशं श्रीमत् पंचाक्षरी, नमः शिवायेति मन्त्रराज भाष्यं रचनया दिदर्शयिषुः तस्य त्रयोविंशतिश्लोकैः निबन्धं चिकीर्षुः, तन्निबन्ध परिसमाप्तिप्रचयगमनाभ्यां ईश्वरार्चन विधानान्तर्गतं परमानन्द शिवरूपवस्तु निर्देशात्मकं मंगलमाचरन् आवृत्त्यादिनाव्याख्यानान्तरैर्विषय प्रयोजने सूचयतित्यागो हीति।

भाष्यकार श्री मद्भगवान् पद्मपादाचार्य—श्रीमत् परमहंस परिव्राजक श्रीमद् भगवत्पाद श्री शंकराचार्य प्रणीत शारीरक सूत्र भाष्य को विचार करनेमें असमर्थ मुमुक्षुजनों के हितार्थ शारीरक सूत्रभाष्यका संक्षिप्त तात्पर्यांशको "नमः शिवाय" इस पंचाक्षरी मन्त्रराज के भाष्य रचना करते हुए, दिखानेकी अभिलाषासे इन तेईस श्लोकों द्वारा उस निबन्ध को बनानेकी इच्छासे उस निबन्ध की

परिसमाप्ति तथा पुष्टि इन दोनों के द्वारा ईश्वरार्चन विधानान्तर्गत परमानन्दशिवरूप वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण करते हुए आवृत्ति आदि भिन्न भिन्न व्याख्यानों से विषय और प्रयोजन को "त्यागोहि" इत्यादिसे सूचित कर रहे हैं।

—०:०:०—

॥ श्री गणेशायनमः ॥

॥ ॐ नमः शिवाय इति मन्त्रः ॥ ॥ ॐ नमः शिवाय यह मन्त्र है ॥

तस्य प्रथमं व्याख्यानम् उसका प्रथम व्याख्यान

त्यागोहि नमसो वाच्यः आनन्दः प्रकृतेस्तथा ॥
फलं प्रत्ययवाच्यं स्यात् त्याज्यं पत्र फलादिकम् ॥१॥
त्यजामीदमिदं सर्वं चतुर्णामिह सिद्धये ॥

पदच्छेद—त्यागः हि नमसः वाच्यः आनन्दः प्रकृतेः तथा फलं प्रत्ययवाच्यं स्यात् त्याज्यं पत्रफलादिकम् त्यजामि इदमिदं सर्वम् चतुर्णाम् इह सिद्धये ॥

(अन्वय)		(वाच्यः)	वाच्य अर्थ
नमसः =	नमः शब्दका	आनन्दः	आनन्द है
वाच्यः	वाच्य अर्थ	तथा	और
त्यागः	त्याग है	प्रत्ययवाच्यम्	प्रत्यय = चतुर्थीका 'आय'का वाच्य अर्थ
हि	निश्चयपूर्वक		
प्रकृतेः	प्रकृति = शिव शब्दका	फलम्	फल

स्यात्	= है
त्याज्यम्	त्याग करने योग्य वस्तु
पत्रफलादिकम्	पत्र फल आदि
इह	इस लोकमें
चतुर्णाम्	चतुर्वर्गकी (धर्म्म अर्थ काम मोक्ष)
सिद्धये	सिद्धिके लिये
इदम्	यह
इदम्	दृश्य सब वस्तु
सर्वं	सबहीको
त्यजामि	त्याग करता हूँ ॥

त्यागः नमःशब्दस्य वाच्यार्थः। स च कर्म्मकाण्ड शास्त्रे प्रसिद्धः। "एतद्वोऽन्नं सोपकरणं नमः" इत्यादौ त्यजामि इत्यर्थः।

"नमः शब्द का वाच्यार्थ त्याग है। यह कर्म्मकाण्ड शास्त्रमें प्रसिद्ध है "एतद् वोऽन्नं सोपकरणं नमः इत्यादिमें "त्याग करता हूँ" यह "नमः" का अर्थ है।

शिवाय इत्यत्र प्रकृतेः शिवशब्दस्य वाच्य आनन्दः आनन्दोपलक्षितं वक्ष्यमाण मर्थादि चतुष्टयं च। शिवायेत्यत्र प्रत्ययस्य चतुर्थी विभक्तेः वाच्यार्थः फलम्। मनोऽभिलपितार्थ सिद्धिः इत्यर्थः।

"शिवाय" इसमें * प्रकृति जो "शिव" शब्द है उसका वाच्य अर्थ आनन्द है। आनन्द शब्द से आगे कहे जाने वाले अर्थादि चार

* 'प्रकृति' 'प्रत्यय' व्याकरण शास्त्रमें प्रसिद्ध है शिव शब्द प्रकृति है इसमें चतुर्थी में जो "आय" लगा है वह प्रत्यय है शिव+आय=शिवाय।

"अर्थ धर्म्म काम मोक्ष" भी उपलक्षित हैं शिवाय इस पदमें जो चतुर्थी विभक्ति "ङे" के स्थान में "य" है उसका वाच्यार्थ "फल" अर्थात "मनोवांञ्छित प्रयोजन सिद्धि" अर्थ है।

अर्थाक्षिप्तं त्यक्तव्यार्थमाह–त्याज्यं पत्रफलादिकम् इति पदार्थमुक्त्वा वाक्यार्थमाहत्यजामीदमिति ।

अर्थ से आया त्यागयोग्य वस्तुओं को कहते हैं त्यागयोग्य वस्तु पत्र फल आदि है। इस प्रकार पदों का अर्थ कहकर वाक्यार्थ कहते हैं "त्यजामीदम्" इत्यादि से।

इदंगन्धपुष्पादिकं गृहीत्वा अनादिगृहीतं च (बुद्ध्याद्यनात्म प्रपञ्च मर्थादि चतुर्णाम् सिद्धये यथायोगंगन्धादिकं) बुद्ध्यादिकञ्च त्यजामि ।

इन गन्ध पुष्पादिकों को लेकर अनादिकाल से ग्रहण किया (बुद्धि आदि अनात्म प्रपञ्च को अर्थादि चारों की सिद्धि के लिए जैसा कि गन्धादि है) बुद्धि आदिकों को भी समर्पण करता हूँ।

अथ त्यजामीदमिदं सर्वं चतुर्णामिह सिद्धये। इतिपदानां आवृत्त्यादिना, यथाभिलषितार्थ कल्पनया मङ्गल विषय प्रयोजन प्रतिपादकानि, वर्णकानिवर्ण्यन्ते ।

अब 'त्यजामीदमिदं सर्वं चतुर्णामिह सिद्धये' इन पदोंकी आवृत्ति आदिके द्वारा यानी घुमाफिराकर इच्छित अर्थ कल्पनाओं से मंगल विषय प्रयोजनके प्रतिपादक वर्णकों यानी व्याख्याओंका वर्णन करते हैं ।

तत्र मंगल विषयकमाह त्यजामीदमिदं सर्वं इति इदं सर्वं यथोपलब्धं गन्ध पुष्प पत्र फल नैवेद्योपहारादिकं शिवायत्यजामि समर्पयामीत्यर्थः ।

मंगल विषयक व्याख्या करते हैं त्यजामीदमिदं सर्वं यह सब जैसा भी जो कुछ गन्ध पुष्प पत्र फल नैवेद्य उपहार आदि उपलब्ध हैं सो शिव के लिए त्याग यानी समर्पण करता हूँ ।

कस्मैप्रयोजनाय—शिवाय-शिव शव्दोपलक्षितानां चतुर्णाम्-अर्थ धर्म्मकामंमोक्षाणाम् इहैव अस्मिन् शरीरे विद्यमान एव सिद्धये प्राप्तये इत्यर्थः—इति प्रथम वर्णाकम् ।

किस प्रयोजन से-शिवके लिये-शिव शव्द से उपलक्षित चारों की (अर्थ धर्म्म काम मोक्ष) इस शरीर के रहते हुवे ही सिद्धि यानी प्राप्ति के लिए । यह एक वर्णाक हुआ (एक प्रकारका अर्थ हुआ)

द्वितीय वर्णाकेन विषयं सूचयति त्यजामीति इदमिदंसर्वं—इदन्तया गृहीतम् अध्यस्तम् अनात्म प्रपञ्चम् गेहदेहेन्द्रियान्तः करणात्मकं सर्वं त्यजामि । अनात्मतया उत्सृजामि ।

द्वितीय वर्णाक से "विषय" बताते हैं त्यजामि इत्यादि यह सब इदन्ता से लिया हुआ अध्यस्त अनात्म प्रपंच, गेह, देह, इन्द्रिय अन्तः करण आदि सब कुछ त्यागता हूँ, अनात्म होने से छोड़ता हूँ ।

अत्र इदन्ता विषयस्य अन्तः करणादेः अध्यस्तो पाद्येस्त्यागात्, भेदकाभावात् फलत्वेन प्रत्यगाभिन्ना द्वितीय ब्रह्मणः प्रतिपाद्यत्वात्

जीवब्रह्मणोरेकत्व लक्षणो "विषय:" सूचितो भवति ।

यहां इदन्ता विषय जो अन्त: करणादि है उसके अध्यस्त उपाधिको पृथक् करनेसे, भेदक यानी विशेषण न रहने से परिणामत: प्रत्यकअभिन्न अद्वितीय ब्रह्म ही प्रतिपाद्य होने से "जीव ब्रह्मका एकत्व" यही "विषय" सूचित होता है ।

तृतीय वर्णकेन प्रयोजन माह त्यजामीदमिदं सर्वं चतुर्णामिह सिद्धये । तत्र अवान्तर प्रयोजनम् अर्थ धर्म्मकामानाम् "इह" इत्युपलक्षणम् ।

तृतीय वर्णकसे प्रयोजन कहते हैं-त्यजामीदम् इत्यादि अवा-न्तर यानि गौण प्रयोजन अर्थ धर्म्म कामकी सिद्धि के लिए "इह" यह उपलक्षण है ।

ऐहिकामुष्मिकाणां सिद्धये, स्वर्गीय शरीर भोग्यानी कथमिह सिद्धि रितिनाशंकनीयम् तत्कारणीभूतापूर्वस्य इह सिद्धा तेषामपि इह सिद्धे: ।

इस जगत् की और परलोक की सिद्धि के लिए । स्वर्गीय शरीर से भोग्य विषयों की प्राप्ति इस शरीर से कैसे होगी ऐसी आशंका नहीं उठती, क्योंकि आमुष्मिक सिद्धि के कारणरूप जो अपूर्व पुण्यादि हैं उनकी यहां सिद्धि हो जाने से उसकी भी सिद्धि हो जाती है ।

इदमिदं पत्रपुष्पफलादिकम् यथोपलब्धं त्यजामि । शिवाय समर्पयामि इत्यर्थः ।

यह सब पत्र पुष्प फल आदि जैसा उपलब्ध है त्यागता हूँ यानी शिवजीको समर्पण करता हूँ ।

ततः ऐहिकार्थं धनं सुवर्णं रजतादिकं लब्ध्वा; ऐहिककामः स्रक् चन्दन वनिता पुत्रादिकं साधयिष्यामि पारलौकिकंचार्थं धर्म्मकर्म्मो पासना-दिनासम्पाद्य पारलौकिकं कामं-स्वर्लोकादि ब्रह्मविष्णुरुद्रशक्तिलोकान्तं साधयिष्यामि इति भावः।

अनन्तर ऐहिक अर्थ–धन सुवर्ण रजत आदि प्राप्त करते हुए ऐहिककाम-माला चन्दन स्त्री पुत्र घर आदि बनायेंगे। "पारलौकिक अर्थ"–धर्म कर्म्म उपासना आदि से सम्पादित करके "पारलौकिक काम" स्वर्ग से लेकर ब्रह्म विष्णु रुद्र शक्तिलोक पर्यन्त साधन करूंगा। ऐसा तात्पर्य है।

परम प्रयोजनं विरक्तावस्था संसाध्यमाहः त्यजामीदमिदं सर्वं मोक्ष सिद्धये इति।

मुख्य प्रयोजन जो विरक्तावस्था से साध्य है उसको कहते हैं यह सब कुछ त्याग करता हूँ मोक्ष सिद्धि के लिये।

अत्रायमाशयः—प्रथममज्ञावस्थायांकृत सकाम कर्म्मोपासनाभोगसमये विषय सुखस्य अनित्यमनुभूयतत्र निष्कामःसन् कृत नित्य प्रायश्चित्त निष्काम कर्म्म प्रभावात् प्राप्त विवेक वैराग्यादिः अहंमोक्षसिद्धये इदमिदं सर्वंत्यजामि।

इसका आशय ऐसा है पहले अज्ञात अवस्था में सकाम कर्म्म उपासना तथा भोग के समय विषय सुख की अनित्यता जानकर पुनः निष्काम होकर किए हुए नित्य प्रायश्चित्त रूप कर्म्म प्रभाव से प्राप्त किया है विवेक वैराग्यादि जिसने–ऐसा मैं–मोक्षसिद्धि के लिए यह सब कुछ त्याग करता हूँ।

इदं देहाद्यन्तःकरणान्तं गेहादि ब्रह्मलोकान्तं सर्वम् अध्यस्तं प्रपञ्चं, अनाद्यविद्यया आत्मनि रज्जुसर्प, शुक्तिकारजत वत् भासमानमपित्यजामि।

इस शरीर से लेकर अन्तःकरण पर्यन्त और गेह से ब्रह्मलोक पर्यन्त, सब कुछ अध्यस्त प्रपंच, अनादि अविद्यासे–रज्जुमें सर्पवत्, सीप में चांदीवत्, जो आत्मभ्रम है उसे छोड़ता हूँ।

स्वप्नार्थ इव तत्र वासनांत्यक्त्वा तत्स्मृतिमपित्यजामि निर्वासनो भवामीत्यर्थः। कस्मैप्रयोजनाय? मुक्तिलब्धये।

स्वप्नदृष्ट वस्तु की भांति उससे वासना को हटाकर उसकी स्मृति को भी त्यागकर निराकांक्ष हो जाता हूं। क्यों? मुक्ति के लिए।

तत्रायं क्रमः—विषय सुखस्यानित्यत्वेनतत्र वासनां त्यक्त्वा, शमादि सम्पाद्य गुरुपदिष्ट तत्त्व मस्यादि वाक्य श्रवणादिजन्य परोक्षात्म ज्ञान प्रचण्ड मार्त्तण्ड प्रकाशापगताज्ञान तमस्कः अहम्—अखण्डैकरस सत्यज्ञानान्दात्म लाभ विगतशोकः परमानन्दात्म स्वरूप इहैव भविष्यामीत्यर्थः।

क्रम ऐसा है–विषय सुख को अनित्य जानकर उससे वासना हटाकर शमादि सम्पादन करके गुरुद्वारा उपदिष्ट "तत्त्वमसि" आदि वाक्यों के श्रवण मननादि से अपरोक्ष आत्मज्ञान रूप प्रचण्ड मार्तण्ड के प्रकाश से अज्ञान रूपी अन्धकार दूर हो गया है जिसका ऐसा मैं–अखण्ड एकरस सत्यज्ञानानन्दात्मलाभ द्वारा विगतशोक परमानन्दात्मस्वरूप इस शरीर से ही हो जाऊंगा ऐसा तात्पर्य है।

इह पदोपादानेन—तरति शोकमात्मवित् ब्रह्मविद् ब्रह्मैवभवति अत्रैवामृतमश्नुते सयोहवै तत्परमं ब्रह्मैव भवति इत्याद्याःश्रुतयोऽनुगृहीता-

भवन्ति । देहेन्द्रियादिबुद्ध्यन्तात्मवादिनश्च प्रत्याख्याता भवन्ति । भ्रमाधिष्ठानात्मशेषत्व प्रतिपादनेन च शून्य वादिनोऽपि निरस्ता भवन्ति । इति प्रथमं व्याख्यानम् ।

इस सिद्धयर्थे इसमें "इह" इस पदके प्रयोग करने से तरति० ब्रह्मविद्० अत्रैवा० सयोह० आदि श्रुतियां सार्थक हो गयीं । देह इन्द्रिय से लेकर बुद्धि पर्यन्त को आत्मा कहने वाले को प्रत्युत्तर मिल गया । भ्रमाधिष्ठान आत्मा ही शेष रहजाता है ऐसा प्रतिपादित होने से शून्यवादी लोग भी निरस्त हो गये । यह प्रथम व्याख्यान हुआ ।

—:०—०—०:—
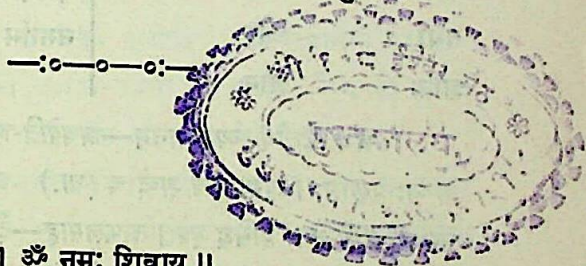
॥ ॐ नमः शिवाय ॥

अथवा नमसो वाच्यः प्रणामो दैन्य लब्धये ॥२॥
दैन्यं सेवा तथा ज्ञप्तिः सिद्धिः सर्वस्य वस्तुनः ॥
नमामि देवदेवेशं सकामोऽकामएववा ॥३॥

पदच्छेद—अथवा, नमसः, वाच्यः, प्रणामः, दैन्य लब्धये, दैन्यम्, सेवा, तथा, ज्ञप्ति, सिद्धिः, सर्वस्य, वस्तुनः नमामि, देवदेवेशं सकामः अकामः एव वा ।

(अन्वय)		सर्वस्य	= सब
अथवा	= अथवा	वस्तुनः	वस्तु की
नमसः	नमःशब्दका	सिद्धिः(अस्ति)	सिद्धि है।
वाच्यः	वाच्य अर्थ	सकामः	कामना सहित
प्रणामः(अस्ति)	प्रणाम है	वा	अथवा
दैन्यलब्धये	दैन्य लाभ के लिए।	अकामः	कामना रहित
दैन्यम्	दीनता	एव	ही
सेवा	सेवा	देवदेवेशं	देव देवेश को
तथा	और	नमामि	प्रणाम करता हूँ।
ज्ञप्तिः	ज्ञान		

अथ द्वितीयं व्याख्यानम्—अथवेति-अथवा प्रकारान्तरेण नमसो-वाच्यः प्रणामः। णमप्रह्वत्वे शब्दे च (धा.) अस्माद् भावे असुन् प्रत्यये, नमनम् इति नमः प्रसिद्ध एव। तत्फलमाह—दैन्य लब्धये।

दूसरा व्याख्यान—अथवा इत्यादि-अथवा प्रकारान्तरसे-नमः शब्दका वाच्य अर्थ प्रणाम है। णम धातु से भाव में असुन् प्रत्यय करके, नम्र होना यह नमस्कार प्रसिद्ध ही है। उसका फल कहते हैं दैन्य की प्राप्ति के लिए।

ईश्वरप्रणामस्य फलप्रदत्वे स्मृतिः प्रमाणम्-ऐकोपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधावभृथेन तुल्यः। इत्यादि।

ईश्वर प्रणाम का फल स्मृति प्रमाण से दिया जाता है—

कृष्ण के लिए किया हुआ एक प्रणाम दस अश्वमेधावभृथके तुल्य है इत्यादि ।

दैन्य शब्दस्यार्थमाह स्वयमेव-दैन्यं सेवा तथा ज्ञप्तिः सिद्धिः सर्वस्य वस्तुनः इति ।

दैन्य शब्दका अर्थ स्वयं ही कहते हैं, दैन्य (सेवा) (भक्ति) ज्ञान सब वस्तुओं की सिद्धि है इस प्रकार ।

फलितार्थ माह—नमामि देवदेवेशं सकामोऽकामएववा इति । तत्र सकामतापक्षे अयमर्थः—देवदेवेशं नमामि किमर्थम्—दैन्यापरपर्याय सेवा-लब्धये परमभक्ति प्राप्त्यै इति भावः ।

फलितार्थ कहते हैं-देवदेवे० इत्यादि उसमें सकामता यश में-यह अर्थ है देवदेवेश को प्रणाम करता हूँ । क्यों ? दैन्य का दूसरा पर्याय सेवा प्राप्ति अर्थात् पराभक्ति की प्राप्ति के लिए ।

दैन्य माहात्म्यं निम्बार्काचार्यैरुक्तम्-स्वकृत दशश्लोक्याम् "कृपाऽस्य दैन्यादियुजिप्रजायते यया भवेत् प्रेम विशेषलक्षणा" भक्तिरनन्याधिपते र्महात्मनः साचोत्तमा साधनरूपिका परा इति ।

दैन्य का महात्म्य निम्बार्काचार्य पाद ने कहा है स्वरचित दश-श्लोकी में दैत्यादियुक्तव्यक्ति पर इनकी कृपा है जिसके द्वारा अद्वितीय ईश्वर महात्म्य के प्रति प्रेम विशेष लक्षणा भक्ति होती है वही उत्तम साधन रुपिका पराभक्ति है इत्यादि ।

पराभक्ति महात्म्य सूचकं-देवहूतींप्रतिकपिलदेव वचनम् भक्तिःसिद्धे-र्गरीयसी इति ।

पराभक्ति माहात्म्य सूचक, देवहूती के प्रति कपिलदेव का वचन—"भक्ति सिद्धि से भी श्रेष्ठ है।"

तथा सर्वस्य वस्तुनः सिद्धये ऐहिकामुष्मिक स्रक्चन्दनादि ब्रह्मलोक पर्यन्त सकलैश्वर्यलब्धये इत्यर्थः।

और सर्व वस्तु की सिद्धि के लिए, इस लोक की और परलोक की माला चन्दन से लेकर ब्रह्मलोक पर्यन्त सर्व ऐश्वर्य लाभ के लिए।

अकामस्तु ज्ञप्तिःलब्धये, ज्ञप्तिः ज्ञानम्, आत्मस्वरूपसाक्षात्कारः, तत्सिद्धये-मोक्षाय इत्यर्थः।

अकाम जो है वह ज्ञप्ति के लाभ के लिए, ज्ञप्ति का अर्थ ज्ञान आत्मस्वरूप साक्षात्कार उसकी सिद्धि के लिए यानी मोक्ष के लिए।

अनेन ईश्वरस्य भोगमोक्षप्रदत्वात् स्वतन्त्रत्वाच तस्यैव उपास्यत्वम् नान्यस्य इति उक्तं भवति। मोक्षप्रदत्वेन असंगत्वं च निरूपितं भवति ॥३॥ इति द्वितीयं व्याख्यानम्।

इस प्रकार से ईश्वर भोग मोक्षप्रद है, स्वतन्त्र है, और वही उपास्य है, दूसरा नहीं है, ऐसा कहा गया समझना चाहिए। और मोक्षप्रदत्व होने से असंगत्व भी प्रमाणित होता है। यह द्वितीय व्याख्यान हो गया ॥३॥

—oo:o:oo—

❀ ॐ नमःशिवाय ❀

नञानिषिध्यते भावविकृतिर्जगदात्मनः ॥
मसनं देवदेवेश नेह नानास्ति शब्दतः ॥४॥

पदच्छेद—नञा, निषिध्यते, भाव विकृतिः, जगदात्मनः, मसनम् देवदेवेश, न, इह, नाना, अस्ति, शब्दतः ॥४॥

(अन्वय)		निषिध्यते	= निषेधकियाजाताहै
(हे)देवदेवेश	=हे देवदेवेश	इह	यहां
नञा	नञ् के द्वारा	नाना	बहु
जगदात्मनः	जगदात्माका	न	नहीं
मसनम्	मसन-परिणाम यानी	अस्ति	है
		शब्दतः	इस श्रुति वाक्य से
भाव विकृतिं	भावविकृतिका	(तद्गम्यते)	यह ज्ञात होता है।

१ १

मसन का अर्थ भावविकार है। हे देवदेवेश नञ्से जगदात्मा के भावविकार का निषेध किया है। इसका समर्थन नेहनानास्ति किञ्चन इस श्रुति वाक्यसे जाना जाता है ॥४॥

मसीपरिणामे–धातुसे "मस्" न-नञ्। भावविकार हैं–१ जन्म लेता है, २ है, ३ विपरिणाम होता है, ४ बढ़ता है, ५ घटता है, ६ नष्ट होता है।

❀ अथ तृतीयं व्याख्यानम् ❀

नञेति—नमःशिवाय इत्यत्र-हे शिव ! हे देवेश ! नञा अव्ययेन जगदात्मनः, जगदाकारेण भासमानस्यापि परमेश्वरस्य तव—मसनं परिणामः भावविकृतिः भावरूपेण विकारः, आकाशादिरूपा-देहान्तःकरणादिरूपाच निषिध्यते। कथम् ? मसीपरिणामे दैवादिकोधातुःतस्य लटिरूपं "मस्यति" इति न-मस्यति, न-विपरिणमते, इति "नमः" क्विप् प्रत्ययान्तः अपरिणामी-अविकारी इत्यर्थः। तस्य सम्बोधने "हे नमः" इति।

॥ अब तीसरा व्याख्यान ॥

"नमः शिवाय" इसमें-हे शिव ! हे देवेश ! "नञ" इस अव्ययसे जगदात्मा जगत्के आकारसे भासमान होते हुए भी तुम्हारा यानी परमेश्वरका 'मसन' अर्थ परिणाम अर्थात् भावविकारका-आकाशादि रूपसे चाहे देह अन्तःकरण आदि रूप से हो, निषेध किया जाता है। कैसे—मसीपरिणामे दिवादिगणीय धातु है उसका लट् में में "मस्यति" यह रूप होगा न—मस्यति = विपरिणाम नहीं होता है क्विप् प्रत्यय करके "नमः" होगया। अपरिणामी, अविकारी यह अर्थ हुआ। उसके सम्बोधन में "हेनमः" इस प्रकार होता है।

केन प्रमाणेन अविकारित्वं परमेश्वरस्य इति आकांक्षायामाह— "नेहनानास्ति शब्दतः" "मनसैवेदमाप्तव्यं नेहनानास्तिकिञ्चन" मृत्योः स मृत्यु माप्नोति यइहनानेव पश्यति" इति कठ वल्लीश्रुतेः।

किस प्रमाण से ईश्वर अविकारी है इस प्रश्नके उत्तरमें कहते

हैं–नेहनानास्ति शब्दसे—"मनसैवेद माप्तव्यं नेहनानास्ति किंचन" मृत्योःसमृत्यु माप्नोति यइह नानेव पश्यति" ऐसा कठवल्लीश्रुति में कहा है।

अस्या अर्थः—इदंब्रह्म आचार्यागमसंस्कृतेन मनसा एकरस मासव्यम् आत्मैव नान्यदस्ति इति। इह अस्मिन् आत्मनि आप्ते-नाना प्रत्युपस्था-पिकाया अविद्याया निवृत्तत्वात् इहब्रह्मणि नानाकिञ्चन अणुमात्रमपि नास्ति-ज्ञातायां रज्जौ सर्प इव।

इस श्रुति का अर्थ–इस ब्रह्म को–आचार्य द्वारा शास्त्रों द्वारा संस्कृत जो मन–उससे एकरस होकर प्राप्त करना चाहिए, अर्थात जानना चाहिये। "आत्मा ही है, और कुछ भी नहीं है" इस प्रकारसे। इस आत्मा के प्राप्त होनें पर–नानात्व कों दिखाने वाली अविद्याकी निवृत्ति हो जाने से–इस ब्रह्म में अणुमात्र भी नानात्व नहीं है ऐसा जैसे कि रज्जुके ज्ञानसे सर्प नहीं रहता है।

यस्तु पुनरनिवृत्ताविद्यः इह ब्रह्मणि नानेव देहादिक मात्मत्वादिना नानेव पश्यति-अज्ञात रज्जु रिव सर्पम्-स मृत्योर्मृत्युँ पुनः पुनर्जन्ममरणादि-लक्षणं संसारं प्राप्नोतीत्यर्थः।

जिसकी अविद्या की निवृत्ति नहीं हुई है—सो इस ब्रह्म में नाना जैसे देहादिको आत्मत्वादिसे देखता है रज्जुका ज्ञान न होनेसे सर्प जैसे– वह "मृत्यु के बाद मृत्यु" अर्थात् बारबार जन्ममरणादिरूप संसार को प्राप्त होता है।

॥ ॐ नमः शिवाय: ॥

अयेति गमयेत्यर्थे तस्माच्छुद्धोऽस्मि नित्यशः ।
प्रणामो देहगेहादे रभिमानस्य नाशनम् ॥५॥

पदच्छेद—अय, इति, गमय, इति, अर्थे, तस्मात्, शुद्धः, अस्मि, नित्यशः, प्रणामः देहगेहादेः अभिमानस्य नाशनम् ॥५॥

(अन्वय)			
अय	= अय	अभिमानस्य	= अभिमान की
इति	यह	नाशनम्	निवृत्ति करनेवाला
गमय	लेजाओ	प्रणामः(अस्ति)	प्रणाम है
इति	इस	तस्मात्	इस कारण
अर्थे(अस्ति)	अर्थ में है	नित्यशः	सदा ही
देहगेहादेः	देहगेह आदिकोंकी	शुद्धः	शुद्ध
		अस्मि	हूँ ।

नमःशब्दार्थमुक्ता शिवाय इत्यत्र अयशब्दार्थ माह-अयेति गमयेत्यर्थे-गमय इत्युक्ते कंकुत्र गमयेयम् इत्याकाङ्क्षाया माह—

"नमः" शब्द का अर्थ कहकर "शिवाय" इस पद में जो "अय" शब्द है उसके अर्थको कहते हैं-अयेति गमयेत्यर्थे—"गमय" "लेजाओ" कहा है—किसको कहां ले जाना इस प्रश्न का उत्तर देते हैं-

प्रणाम इति–देहादेः–अन्नमयादिकोशपंचकस्य गेहादेः–सकल भूत भौतिकाकाशादि चतुर्दशलोकात्मकस्य जगतो योऽभिमानः "इदमहमस्मि" इतिदेहाद्यभिमानः तथा "इदंमे अस्ति" इदंमे स्यात्" इति ऐहिकामुष्मिकभोग्य

विशेष गेहादे रभिमानः, तस्य द्विविधस्यापि अभिमानस्य नाशनम्=निवर्त्तनं प्रणामः ।

"प्रणाम" शव्दसे–देह आदिका-अन्नमयादि पांचोकोशों का–और गेह आदिका–समस्त भूत भौतिक आकाश आदि चतुर्दशलोकात्मक जगत् का जो अभिमान अर्थात् "यह मेरा है" "यह मेरा" होवे ऐसा ऐहिक पारत्रिक भोग्यवस्तु विशेष जो गेह आदि; उसका अभिमान इन दोनों अभिमानों का नाश यानी निवृत्ति ही कहा गया है।

कुत एतत्–प्रणामस्य आत्मसमर्पणात्मकत्वात् । अभिमानद्वयत्यागं-विना आत्मसमर्पणं न सम्भवति । अहंच त्वां प्रणतः, त्वद्भक्तः, निर्गत देहगेहाद्यभिमानः, तस्मात् शुद्धोस्मि-अधिकारीच अतः मामेव आत्मनि अय गमय इत्यर्थः ।

कैसे ? आत्मसमर्पणात्मक क्रिया का नाम प्रणाम है। दोनों अभिमानों को त्यागे विना हो नहीं सकता । मैं तुम्हारे आगे प्रणत हूँ, तुम्हारा भक्त हूँ, देहगेहादिका अभिमान मुझमें नहीं है–अतः सदा शुद्ध होने से अधिकारी भी हूँ, इस कारण मुझे अपने में ले जावो, लीन करलो, यह भाव है।

अपरिणामिनि निर्विकारेनिरवच्छिन्ने सदैक रूपेत्वयिस्थानान्तर गमनवत् गमनासम्भवात्, ममापि वस्तुतः पूर्णात्मनः त्वत्तः अभिन्नत्वेन त्वद्रूपत्वात्-अनाविर्भूतमिव-आत्मानमेव आत्मज्ञान प्रदानेन आविर्भूतमिव कृत्वा परिपूर्णानन्देकरसात्मानं एव मां कुरु इत्यर्थः । इति तृतीयं व्याख्यानम् ।

अपरिणामी निर्विकार निरवच्छिन्न सदा एक रस तुममें दूसरे स्थान में जाना जैसे जाना सम्भव न होने से वस्तुतः पूर्णात्मा तुमसे मेरी अभिन्नता होने से आपका स्वरूप ही होनेसे-अप्रकट जैसे आत्मा कोही आत्मज्ञान देकर प्रकट जैसा करके परिपूर्णानन्द एकरस रूपही मुझे बना दो ऐसा अभिप्रायः है। यह तीसरा व्याख्यान हुआ।
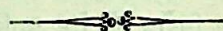
॥ ॐ नमः शिवाय ॥

शिवो ब्रह्मादिरूपःस्याच्छक्तिभिस्तिसृभिःसह ।
अथवा तुर्यमेवस्या न्निर्गुणं ब्रह्मतत्परम् ॥६॥

पदच्छेद—शिवः ब्रह्मादिरूपः स्यात्, शक्तिभिः; तिसृभिः सह, अथवा, तुर्यम्, एव, स्यात् निर्गुणं, ब्रह्म, तत् परम् ॥६॥

(अन्वय)		तत्	= वह
शिवः	= शिव परमात्मा	निर्गुणम्	निर्गुण
तिसृभिः	तीनों	परम्	पर श्रेष्ठ
शक्तिभिः	शक्तियों के	ब्रह्म	ब्रह्म
सह	साथ	तुर्यम्	चतुर्थ
ब्रह्मादिरूप	ब्रह्मा आदिरूप	एव	ही
स्यात्	हो	स्यात्	हो
अथवा	अथवा		

अथ चतुर्थं व्याख्यानम्-शिवइति—

शिवः परमात्मा तिसृभिः—स्वमायागुणकृताभिः ईक्षणादिव्यापार हेतुभूताभिः सर्जन-पालन-विलायन शक्तिभिः सहितःसन् ब्रह्मादिरूपः स्यात् ।

अब चौथाव्याख्यान-शिव इत्यादि—

शिव—परमात्मा तीनो के साथ, यानी-अपने माया गुण से कृत ईक्षणादि क्रिया के कारणभूत-सृष्टि पालन संहार शक्ति के साथ ब्रह्मा आदि रूपसे होते हैं।

अत्र श्वेताश्वतर श्रुतिः—"तमीश्वराणां परमं महेश्वरम्" इत्यादिः । अत्र भाष्यम्—ईश्वराणां जगदुत्पत्तिस्थितिलय हेतुभूतानां ब्रह्म विष्णुरुद्राणां परममुत्कृष्टं महेश्वरम् च ईश्वराणामपि ईशितृत्वस्य तदधीनत्वात् इति ।

इस विषय पर श्वेताश्वतरश्रुति कहती है—"तमीश्वराणां परमं महेश्वरम् "इत्यादि-इसका भाष्य-ईश्वरोंका यानी जगत्के सृष्टिस्थितिविनाशके हेतुभूत ब्रह्मा विष्णु रुद्र का परम-अर्थात् उत्कृष्ट महेश्वर को भी ईश्वरों का जो ऐश्वर्य है वह उस महेश्वर के ही अधीन है।

शिवपुराणे च द्वितीयाध्याये—सद्रूपाद्ब्रह्मण एव ईक्षण पूर्विका प्रकृतेरुत्पत्तिः, ततएव पुरुषोत्पत्तिः तौच आकाशवागुक्त कृततपः प्रभावोत्पन्न जलशयनात् नारायणौ नारायण नामानौ आस्ताम् ।

शिवपुराण के दूसरे अध्याय में-सद्रूप ब्रह्म से ईक्षण पूर्वक

प्रकृति की उत्पत्ति और उससे ही पुरुष की उत्पत्ति और वे दोनों आकाशवाणी द्वारा प्रेरित होकर तप करते हैं, तपः प्रभावसे उत्पन्न जलशयन से नारायणी नारायण नाम दोनों के हुए।

नारायण नाभिकमलाद् ब्रह्मोत्पत्तिः विष्णुसमागमः तयोः संशयोच्छेदार्थं लिंगप्रादुर्भावः तत्प्रमाणाज्ञाने पंचास्य शिवप्रादुर्भावः वरप्रदानं च रुद्ररूपोत्पत्तिः, ब्रह्माणी लक्ष्मी कालिकानां प्रकृतेरुत्पत्तिः, ब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्यः तत्प्रदानम् इति।

नारायण के नाभिकमल से ब्रह्माकी उत्पत्ति-विष्णुके साथ समागम दोनों के संशय को दूर करने के लिए लिङ्गकी उत्पत्ति लिङ्ग प्रमाण ज्ञान में असमर्थ होने पर पंचमुखशिवका प्रादुर्भाव और वरप्रदान, रुद्ररूप की उत्पत्ति; ब्रह्माणी लक्ष्मीकालीका रूपिणी प्रकृतियों की उत्पत्ति, ब्रह्मा विष्णु और रुद्रको उनका दान इत्यादि।

अत्रकारणस्य सत ईक्षणादि निरूपणात् जड़ायः प्रकृते स्तदसम्भवात् प्रकृतेः स्वरूपस्य च ईक्षणमात्रत्व निरूपणात् सांख्यादिमतनिरास इति एतेन सगुणोपासन मुक्तं भवति।

यहां सत रूप कारणका ईक्षण आदि निरूपण करने से जड़ा प्रकृति द्वारा यह कार्य असम्भव होने से प्रकृति का और स्वरूपका भी ईक्षण मात्रत्व निरूपित होने से सांख्यादिमतका निरास होगया। इसके द्वारा सगुण उपासना कही गयी।

अथनिर्गुण तुर्य ब्रह्मरूप शिव प्रतिपादिकांमाण्डूक्य श्रुतिमेव अनु-

सृत्य आह-अथवेति-अथवा-पक्षान्तरे शिवशब्देन सगुणं निर्गुणं च ब्रह्म उच्यते लक्ष्यते च ।

फिर निर्गुण तुरीय ब्रह्मरूप शिवकी प्रतिपादन करने वाली माण्डूक्याश्रुतिका ही अनुसरण करते हुए कहते हैं अथवा इत्यादि-अथवा-यानी पक्षान्तर में शिवशब्द का वाच्य अर्थ और लक्ष्यअर्थ सगुण तथा निर्गुण ब्रह्म ही है।

—ooºoºoo—

❀ ॐ नमःशिवाय ❀

नमसो नमने शक्ति र्नमनं ध्यानमेवच ।
ङे ऽन्तात्तादात्म्यसंबन्धः कथ्यते प्रत्यगात्मनोः ॥७॥

पदच्छेदः—नमसः नमने शक्तिः नमनम् ध्यानम् एव च ङेन्तात् तादात्म्य सम्बन्धः कथ्यते प्रत्यगात्मनोः ॥७॥

(अन्वय)	
नमसः	= नमः शब्दका
नमने	नमन में
शक्तिः(अस्ति)	शक्ति है
अमनम्	नमन
ध्यानम्	ध्यान
एवच	= ही है
ङेन्तात्	चतुर्थ्यन्त से
प्रत्यगात्मनोः	जीवात्मापरमात्माका
तादात्म्य	
सम्बन्धः	तादात्म्य सम्बन्ध
कथ्यते	कहा जा रहा है

शिवशब्दार्थं मुक्त्वा नमः शब्दार्थं माह नमसो नमने शक्तिरिति-नमःशब्दस्य नमने नम्रीभावे शक्तिः । नमनम् इति नमः भावे असुन् । नमः शब्दस्य लक्ष्यार्थं माह नमनं ध्यानमेवच ध्यानं निदिध्यासनमेव ।

शिव शब्दका अर्थ कहकर नमः शब्दका अर्थ कहते हैं नमसो नमने इत्यादि-नमः शब्दका नमन यानी नम्र होने के अर्थ में शक्ति है । नमन नमः, भाव में असुन् प्रत्यय है । नमः शब्द के लक्ष्यार्थको कहते हैं नमन ध्यान ही है । ध्यान और निदिध्यासन एक ही है ।

शिवायेति तादर्थ्ये चतुर्थी तस्याः शिवार्थम्" अर्थः प्रत्यगात्म तादात्म्यलाभाय इत्यर्थ ।

"शिवाय" इसमें तादर्थ्य में चतुर्थी हो चतुर्थी का शिव के लिए यह अर्थ है । प्रत्यगात्मासे तादात्म्य लाभके लिए ऐसा अर्थ है ।

तथा च वाक्यार्थः—अहं शिवतादात्म्यलाभाय नमनं निदिध्यासनं-करोमि । तेन ध्यातृध्याने परित्यज्य "ब्रह्माहमस्मि" इति ध्येयैकगोचराज्ञातवृत्ति प्रवाह सम्पादनेन आत्मन्येवसमाहितो भविष्यामि इत्यर्थः ।

अब वाक्यार्थ कहते हैं—मैं शिव तादात्म्य लाभके लिए नमन अर्थात् निदिध्यासन करता हूँ । इसके द्वारा ध्याता और ध्यान को हटाकर "मैं ब्रह्म हूँ" इस प्रकार एक मात्र ध्येय बनकर अज्ञात वृत्ति प्रवाह का सम्पादन करते हुए अपने में आप समाधिस्थ हो जाऊंगा ऐसा अभिप्राय है ।

—:०—०—०:—

❀ ॐ नमःशिवाय ❀

अहंशिवः शिवोऽहंच मन्ये वेदान्त निष्ठया ।
इत्येवं नम इत्युक्तं वेदैः शास्त्रैश्च सर्वशः ॥८॥

पदच्छेदः—अहंशिवः शिवः अहं, च, मन्ये, वेदान्त निष्ठया, इति, एवं, नमः, इति, उक्त वेदैः, शास्त्रैः, च, सर्वशः ॥८॥

(अन्वय)

वेदान्त निष्ठया	= वेदान्तनिष्ठाकेद्वारा	सर्वशः	= हर प्रकारसे
अहंशिवः	मैं शिव हूँ	वेदैः	वेदों द्वारा
शिवः अहंच	शिव मैं हूँ	शास्त्रैःच	शास्त्रों द्वारा
मन्ये	समझ रहा हूँ	नमः इति	नमः ऐसा
इत्येवम्	ऐसा	उक्तम्	कहा गया है

एवम् आत्मनिष्ठस्य आत्मानं परिपूर्णानन्दैकरसं जानतः आनन्दोद्गारमाह अहंशिवःशिवोऽहंच इति ।

इस प्रकार आत्मनिष्ठका जोकि अपने को परिपूर्ण आनन्द से एकरस जान रहा है, उसके आनन्दोच्छ्वास का वर्णन करते हैं । मैं शिव हूँ शिव मैं हूँ इत्यादि ।

एवम् नमः इत्यस्य ध्यानार्थत्वे हेतुमाह-यतः कारणात् सर्वैर्वेदैः- "आत्मावा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्योमन्तव्यो निदिध्यासितव्यः" इत्यादिभिः ।

इसी प्रकार "नमः" इसका ध्यान अर्थ है इसका कारण कहते हैं क्योंकि सब ही वेद–आत्मा ही देखने योग्य, सुनने योग्य, मनन योग्य ध्यान योग्य है ऐसा कहते हैं ।

शास्त्रैश्च—शनैःशनैरुपरमेद्बुध्याधृतिगृहीतया । आत्मसंस्थं मनः कृत्वा नकिंचिदपिचिन्तयेत् । इत्यादिभिः ध्यानमेव उक्तम् । इतिहेतोः "नमनं ध्यानमेवच" इति एवं वेदान्तनिष्ठया "तत्त्वमसि" अहंब्रह्मास्मि" इति आत्मनिष्ठोभवामि इत्यर्थः ।

शास्त्रों ने भी–"धीरेधीरे धैर्यबुद्धि द्वारा उपरत होवे मन को आत्मसंस्थ करके फिर कुछ भी चिन्ता न करे" ऐसा ध्यान ही कहा है । इसकारण "नमः" शव्दका तात्पर्य भी नमन ध्यान ही है" ऐसा कहा है । इस प्रकार वेदान्त निष्ठा के द्वारा "तत्त्वमसि" "अहंब्रह्मास्मि" इस प्रकार आत्मनिष्ठ होता हूँ यह अभिप्राय है ।

॥ ॐ नमःशिवाय ॥

अथवा दास एवाह महंदास इतीरणम् ।
इत्येवनमइत्युक्तं वेदैः शास्त्रैश्च सर्वशः ॥६॥

पदच्छेद—अथवा, दासः, एव, अहं, अहंदासः ईरणम् इति एव नमः इति उक्तम्, वेदैः शास्त्रैः च, सर्वशः ॥६॥

(अन्वय)

अथवा	= अथवा-पक्षान्तरमें	नमः	= नमः है
दास एवअहम्	दास ही मैं हूँ	सर्वशः	सव प्रकार से
अहंदासः	मैं दास हूं	वेदैः	वेदों द्वारा
इति	ऐसा	शास्त्रैः	शास्त्रों द्वारा
ईरणम् (भवतु)	कथन होवे	इति	ऐसा
इत्येव	यही	उक्तम्	कहा गया है

मन्द मध्याधिकारिणौ उद्दिश्य आह—अथवा दास एवा हमिति नमःशब्दम् नमस्कारार्थम् अभिप्रेत्य आह नम इति । नमस्करोमि इत्येव ईरणं-कथनं यत् तत् दास एवाहम् अहंदास इति ईरणम् ।

मन्द और मध्य अधिकारी के लिए कहते हैं अथवा दास इत्यादि । नमः शब्द नमस्कारार्थक है इस अभिप्राय को लेकर कहते हैं "नमः इति" "नमस्कार करता हूँ" इतना जो कहना है "दास ही मैं हूँ मैं दास हूँ" यह ही कहना है ।

कुतः ? यतःसर्वश: सर्वैर्वेदैः "ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरःसर्वभूतानाम्" इत्यादिभिः सर्वभूतनियन्तृत्वकथनेन-भूतानां दासत्वं ईश्वर प्रवर्त्यत्व मुक्तम् ।

कैसे ? क्योंकि सबही वेद-"सम्पूर्णविद्याओं तथा जड़चेतन मात्र का ईश्वर वह है" इस वचन के द्वारा, सम्पूर्ण चराचर के नियन्ता होने से सम्पूर्ण चराचर उसके दास हैं ऐसा कहते हैं ।

शास्त्रैश्च—ईश्वरःसर्वभूतानांहृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढ़ानि मायया । इत्यादिभिश्च ईश्वराधीनत्व कथनेन जीवानां दासत्वमेव उक्तं भवतीति ।

शास्त्रों द्वारा भी "सर्वभूतों के हृदय में ईश्वर है अपनी माया से यन्त्रारूढ़ सर्वभूतों को भ्रामित करता रहता है" आदिसे ईश्वराधीनत्व जब कहा गया तब वह जीवों का दासत्व ही कहा जायगा ।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

अथवेदमिदं सर्वं त्यजामि परमाप्तये ।
अर्थं धर्म्मं च कामञ्च वाञ्छैश्च जगदीश्वरम् ॥१०॥

पदच्छेद—अथवा, इदम्इदम् सर्वं त्यजामि परमाप्तये अर्थं धर्म्मंच कामम् च वाञ्छन् च जगदीश्वरम् ॥१०॥

(अन्वय)		अर्थं	अर्थ
अथवा	= अथवा	धर्म्मं	धर्म्म
इदमिदं	यह जो कुछ	कामं	काम
सर्वम्	सब	जगदीश्वरंच	और जगदीश्वरकी
परमाप्तये	परमेश्वरप्राप्तिकेलिए	वाञ्छन्	इच्छा करता हुआ
त्यजामि	त्याग करता हूं		

इदानीं नमः शब्दस्य त्यागार्थत्व प्रतिपादनं पूर्वोक्तम् उपासनं अत्रापि अनुवदति, अग्रिमश्लोके विशेषार्थस्य वक्ष्यमाणत्वात्–अथवेति ।

अब 'नमः' शब्दके त्यागार्थ के औचित्य प्रतिपादन द्वारा पूर्वोक्त उपासना की यहां भी पुनरावृत्ति कर रहे हैं । आगे वाले श्लोक में विशेष अर्थ कहा जायगा । अथवा आदि ।

इदमिदं सर्वं परमस्य परमेश्वरस्य आप्तये अनुग्रहार्थं इतियावत् । त्यजामि यत्रफलादिकं समर्पयामि इति किमिच्छँस्त्यजसीत्याकांक्षायामाह—

यह सब कुछ "परम" की अर्थात् परमेश्वर की आप्ति यानी

प्राप्ति के लिए, अर्थात् अनुग्रह के लिए त्याग करता हूं। किस इच्छा से त्याग करते हो इसके उत्तर में कहते हैं—

"अर्थं धर्म्मं च कामं च वाञ्छैश्च जगदीश्वरम्" अर्थधर्म्म कामान् इति सगुणोपासनम्। जगदीश्वरम् परमेश्वरभावम् इति निर्गुणोपासनम्।

"अर्थ धर्म्म काम और जगदीश्वर की इच्छा से", अर्थ धर्म्म कामकी इच्छा तक सगुणोपासन है। "जगदीश्वर" यानी परमेश्वर भावकी इच्छा यह निर्गुणोपासन है।

—∞:∞—

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

एतन्मन्त्रार्थतत्वज्ञैर्वेदवेदान्त तत्परैः ।
निर्णीतं तत्त्व गर्भं यद् विज्ञेयं मुक्ति लब्धये ॥११॥

पदच्छेद—एतत्, मन्त्रार्थतत्त्वज्ञैः वेदवेदान्ततत्परैः निर्णीतं तत्त्व गर्भं यत् विज्ञेयं मुक्तिलब्धये ॥११॥

(अन्वय)

मंत्रार्थतत्त्वज्ञैः	= मंत्रार्थ तत्त्वके जानने वाले	यत्	= जो
वेदवेदान्ततत्परैः	वेदवेदान्त अध्ययन करने वालोंने	एतत्	यह
तत्त्वगर्भम्	तत्त्वसे भरा हुआ	निर्णीतम् (तत)	निर्णयकियाहै वह
		मुक्ति लब्धये	मुक्तिलाभके लिए
		विज्ञेयम्	जानना चाहिए।

अत्रपूर्वाचार्य सम्मतिं स्वाभिप्रेतार्थंच आह—एतत् इतिएतत्सर्वं सगुणोपासनं निर्गुणोपासनं च वेदतत्परैः मन्त्रार्थज्ञैः कर्म्मोपासननिष्ठैःकर्म्म उपासनं च निर्णीतम् इति।

इसमें पूर्वाचार्य की सम्मति और अपना अभिप्राय भी कहते हैं एतत् आदि-यह सब सगुणोपासना और निर्गुणोपासना वेदाध्ययन शील मन्त्रके अर्थ जानने वाले कर्म्म और उपासना का निर्णय किया।

तथा तत्त्वज्ञैर्वेदान्ततत्परैर्जगदीश्वरोपलक्षितब्रह्मोपासनतत्परै र्ब्रह्मोपासनं निर्णीतम् इति।

और तत्त्वज्ञ ब्रह्मतत्पर अर्थात् जगदीश्वर नामसे उपलक्षित ब्रह्मके उपासकों द्वारा ब्रह्म की उपासना का निर्णय किया है।

अत्राभिप्रेतार्थमाह—यत्तत्त्वगर्भं शास्त्रतात्पर्यार्थगोचरम् आत्मतत्त्वज्ञानार्थं साधनं मुक्तिलब्धये तदेव विज्ञेयम् इति।

इसका अभिप्राय क्या है? कहते हैं—जो तत्त्व गर्भ अर्थात् शास्त्रके तात्पर्यार्थ से प्रतीत होने वाला आत्मतत्त्वज्ञानरूप प्रयोजनका साधन है, मुक्तिलाभ के लिए, वही जानना चाहिए।

तत्रकर्म्म सगुणोपासनं च क्रमेण मुक्तिसाधनम् ब्रह्मोपासनंच साक्षान्मुक्ति लब्धये इतिविज्ञेयम् इति।

उसमें कर्म्म और सगुण उपासना तो क्रमसे मुक्ति का साधन है और ब्रह्म की उपासना साक्षात् मुक्ति साधन है ऐसा जानना।

❀ ॐ नमःशिवाय ❀

अथवा मुक्तिलाभाय ध्येयं तत्त्वं विवेकतः ।
भिन्नं बुध्वा हृदादेवं मन्त्रेणेशंजगद्गुरुम् ॥१२॥

पदच्छेद—अथवा, मुक्तिलाभाय, ध्येयं, तत्त्वम्, विवेकतः भिन्नं, बुध्वा, हृदा देवं मन्त्रेण ईशं जगद्गुरुम् ॥१२॥

(अन्वय)

अथवा	= अथवा	बुध्वा	जानकर
मुक्तिलाभाय	मुक्तिलाभके लिए	हृदा	हृदयसे
जगद्गुरुम्	जगद्गुरु	मन्त्रेण	मन्त्र अर्थात् शास्त्र द्वारा
ईशम्	ईश्वर	विवेकतः	विवेकविचार पूर्वक
देवम्	देवको	तत्त्वम्	तत्त्वका
भिन्नम्	सब उपाधियों से पृथक्	ध्येयम्	ध्यान करनाचाहिये

अथ पुनः उत्तमाधिकारिणं प्रति आह अथवा इति प्रज्ञावतां किं क्रममुक्तिप्रदेन उपासनेन-मुक्तिलाभार्थं विवेकतः विवेचन पूर्वकं आत्मतत्त्वं ध्येयं विज्ञेयं इत्यर्थः ।

अब पुनः उत्तमाधिकारी के लिए कहते हैं अथवा आदि से प्रज्ञावान् जो पुरुष है उनको क्रममुक्ति देने वाली उपासना से क्या लाभ । मुक्तिलाभके लिए विवेकके द्वारा आत्मतत्त्व का ध्यान करे ।

विज्ञान प्रकारम् आह–हृदाविवेकत्याबुध्यामन्त्रेण सपर्यगाच्छुक्रम् इत्यादिना तत्त्वमस्यादि महावाक्येन च जगद्गुरुम् ईशम् देवम्–जगत्कर्तृत्व सर्वज्ञत्वादि अध्यस्तात् ईशोपाधितः, अन्तः करणादि अध्यस्त जीवोपाधितश्च भिन्नम्तन्निषेधाधिष्ठानम् असंगम् रजतादिविवर्त्ताधिष्ठानम् इव शुक्तादिकम् तथार्थतयाज्ञात्वा एत्तत् अनारोपितस्वरूपम् परंतत्वं तदेवध्येयम् ब्रह्माहमस्मि इति अनुसन्धेयम् इत्यर्थः - इति चतुर्थं व्याख्यानम् ॥

विज्ञान का प्रकार कहते हैं—विवेकवाली बुद्धिसे, मन्त्र "सपर्यगात्" इत्यादि से "तत्त्वमसि" आदि महावाक्यों से जगत् के गुरु ईश्वरदेव को यानी जगत्कर्त्तृत्व,सर्वज्ञत्व आदि अध्यस्त जो ईश्वर के उपाधि है, अन्तःकरण आदि अध्यस्त जो जीव के उपाधि हैं, उनसे पृथक् उनके निषेध का अधिष्ठान, असंग, रजतादिविवर्त्त का अधिष्ठान शुक्तिआदि जैसे, उसी तरह वास्तव में जानकर जो वह उपाधि आदि से हीन, स्वरूपपरमतत्त्व है उसका ही ध्यान करना चाहिए। अर्थात् "ब्रह्म मैं हूँ" ऐसा अनुसन्धान करना चाहिए ऐसा भाव है यह चौथा व्याख्यान हुआ।

—:०—०—०:—

॥ ॐ नमःशिवाय ॥

नमेरचि नमः प्रोक्तोजन्तास्याज्जगदीश्वरे ।
तस्माद्दासोऽह मित्येवं मत्त्वामां प्रापयात्मनि ॥१३॥

पदच्छेदः—नमेः अचि, नमः, प्रोक्तः, जन्ता, स्यात, जगदीश्वरे, तस्मात् दासः, अहम्, इति, एवम्, मत्त्वा, मां, प्रापय, आत्मनि ॥१३॥

(अन्वय)

नमेः	= नमधातु से	अहं	मैं
अचि	अच् प्रत्यय करके	दास	दास हूँ
नमः	नमःपद हुआ	इति	इस
प्रोक्तः	कहा है	एवं	प्रकार
जन्ता	जन्ता	मत्त्वा	मानकर
स्यात्	है	मां	मुझे
जगदीश्वरे	जगदीश्वर का नाम	आत्मनि	अपने आपामें
तस्मात्	इसकारण	प्रापय	पहुँचादो ॥

अथपञ्चमंव्याख्यानम् नमेःइति—नमस्कारार्थस्य नमःधातोः पचादेरच् इति अच्प्रत्यये-नमतीति नमः प्रणाम कर्त्ता उपासकः प्रोक्तः ।

अब पांचवां व्याख्यान कहतेहैं—नमेः आदि नमस्कारार्थक नमधातु से पचादेरच् से अच् प्रत्यय करके नमः शब्दवना, जिसका अर्थ प्रणामकर्त्ता उपासक कहा जाता है ।

तथाजन्ताइति—जमु अदने अस्यधातोःतृच्प्रत्ययान्तः, जमतीति जन्ता सर्वस्य अत्ता, उपसंहर्त्ता, इति जगदीश्वरे शिवे प्रयोःस्यात् ।

फिर जन्ता शब्द, जमु अदने धातु से तृच् प्रत्यय करके बना जन्ता का अर्थ, भोजन करने वाला=सबको खाने वाला=संहार करने वाला, यह शब्द जगदीश्वर शिव के लिए प्रयोग होता है ।

कस्माच्छिव एव जन्तेतिशब्दवाच्यः इत्याकांक्षायां–शिवशब्दस्यापि तदर्थकत्वात् इति–इण्शीभ्यांवन् उपधाया इत्वम् शेते अस्मिन् सर्वम् इति शिवः शम्भुः, सोऽपिसर्वसंहर्त्तेति भावः । तस्यसम्बोधने हे शिव, अहंनमः, नमनकर्त्ता तवदासोऽहम् । "योयच्छ्रद्धः सएव सः" इत्येवं मां मत्वाज्ञात्वा आत्मनि अय प्रापय । आत्मस्वरूपज्ञानप्रदानेन आत्मस्वरूपं मांकुरु इत्यर्थः ।

"जन्ता" शब्द का वाच्य शिव ही क्यों है ? इस प्रश्न के उत्तर में कहते हैं—"शिव" शब्द का भी वही अर्थ है–इण्शीभ्यां वन् इस सूत्र से शी धातुसे वन्–उपधाको इत्व करके शिव शब्द बनता है । इसमें सब सोते हैं इससे "शिव"=शम्भु, वह भी सर्वसंहर्ता है उसके सम्बोधन में हे शिव, मैं नमः नमनकर्ता तुम्हारा दास हूँ, जिसकी श्रद्धा जिसमें है, वह वही है" ऐसा मुझे जानकर अपने में पहुंचाओ आत्मस्वरूपज्ञान देकर मुझे आत्मस्वरूप बनादो ऐसा भाव है ।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

अस्मिञ्छेते जगत्सर्वं तन्मयं शब्दगामियत् ।
तद्वानाच्छिव इत्युक्तं कारणं ब्रह्म तत्पराः ॥१४॥

पदच्छेदः—अस्मिन्, शेते, जगत्, सर्वं, तन्मयं, शव्दगामि, यत, तत्, वानात्, शिव, इति, उक्तम्, कारणं ब्रह्म तत्पराः ॥१४॥

(अन्वय)

सर्वम्	= सम्पूर्ण	तत्	= उस (अव्यक्त का)
जगत्	जगत्	वानात्	प्रेरक होनेसे
अस्मिन्	इसमें	(हे)ब्रह्मतत्पराः	हे ब्रह्मतत्परजनों
शेते	शयन करता है	कारणं(ब्रह्म)	कारण ब्रह्मको
यत्	जो	शिव	शिव
शव्दगामि	वाणीका विषय है	इति	ऐसा
(तत्) तन्मयम्	वह तन्मय = प्रकृतिमय है ।	उक्तम्	कहा है ।

अथ षष्ठं व्याख्यानमाह—अस्मिन्निति–सर्वजगत् शेतेप्रलयकाले लयं प्राप्नोति अस्मिन् इति शिं शव्दोपपादित मव्यक्तं प्रकृतिः इत्यर्थः ।

अब छठा व्याख्यान कहते हैं—अस्मिन् आदि-समस्त जगत् सोता है यानी "प्रलयकाल में लय होता है इसमें "ऐसे" "शिं" शब्द द्वारा अव्यक्त अर्थात् प्रकृति को समझते हैं।

तथा यत् शब्दगामि वाग्विषयं नामरूपात्मकं प्रपञ्चजातम् स्थिति-काले अवभासते देहेन्द्रियादिकं भूस्वर्गादिकं च तत् तन्मयम् प्रकृतिमयं प्रकृतेरेव परिणाम इत्यर्थः ।

और जो कुछ शब्दगामि अर्थात् वाणी का विषय, नामरूपात्मक प्रपञ्च समूह, स्थितिकाल में व्यक्त होता है, देह इन्द्रियादि भूमि स्वर्ग आदि वह सब तन्मय = प्रकृतिमय यानी प्रकृति का ही परिणाम है।

तथा श्रुतिः वाचारम्भणं विकारोनामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यम् इति, तद्वानात्-तस्य अव्यक्तस्य वानात्, वननात्, भाव घञ् तं शिं अव्यक्तं प्रकृतिम्, वन्यति-भाजयति नामरूपाभ्यां व्याकरोति, आकाशादिविभागं प्रापयति इति शिवः ड प्रत्ययान्तः। कारणं ब्रह्म शिवशब्देन उच्यते हे तत्परा ब्रह्मतत्परा इत्यर्थः।

श्रुति भी वाचारम्भणं० इत्यादि-उसके "वान" से उस अव्यक्त के वानसे वननसे, भावमें घञ्। उस शिं को-अव्यक्त प्रकृतिको विभक्त करता है-नामरूप द्वारा भिन्नभिन्न प्रकट करता है, आकाश आदि विभाग से विभाजित करता है-ऐसे-शिव 'ड' प्रत्यय से बना कारण ब्रह्मको शिव शब्द से सम्बोधित करते हैं, हे तत्पर व्यक्तिओ यानी ब्रह्मतत्पर व्यक्तिओ ऐसा अर्थ है।

अथवा वागतिगन्धनयोः इत्यस्य धातो वनिशब्दः—तद्वानात् तस्य अव्यक्तस्य स्वस्मिन् अव्यक्तरूपेण अवस्थितस्य वानात् सूचनात् नाम-रूपाभ्यां व्याकरणात् इत्यर्थः।

अथवा वा गतिगन्धनयोः इस धातु से वानशब्द हुवा, "तद्वानात्" का अर्थ उस अव्यक्तका जो अपने आपामें अव्यक्तरूप से अवस्थित है, इसकी वानसे अर्थात् सूचना से नामरूप द्वारा प्रकाश में आने से यह अर्थ हुवा।

॥ ॐ नमःशिवाय ॥

नमायस्यास्तिलक्ष्मीश सोऽहंदेवो न संशयः ।
तस्मान्मे प्रापयेहैव लक्ष्मीं विद्यां सनातनीम् ॥१५॥

पदच्छेद—न, मा, यस्य, अस्ति, लक्ष्मीश, सः, अहं, देवः, न, संशयः, तस्मात्, मे, प्रापय, इह, एव, लक्ष्मीम्, विद्याम्, सनातनीम् ।१५।

(अन्वयः)

हेदेव	= हेदेव	न	= नहीं है
लक्ष्मीश	लक्ष्मीपते	तस्मात्	इसकारण
न	नहीं	मे	मुझे
मा	लक्ष्मी	सनातनीम्	सनातनी
यस्य	जिसका	लक्ष्मीम्	लक्ष्मीरूपी जो
अस्ति	है	विद्याम्	विद्या है
सः	वह	इह	यहां
अहम्	मैं हूँ	एव	ही
संशयः	इसमें संशय	प्रापय	पहुँचाओ

शिव शब्दार्थम् उक्ता नमःशब्दार्थम् आह—नमायस्य अस्ति इति—अत्रमाशब्दो लक्ष्मीवाचकः—"इन्दिरा लोकमाता मा" इत्यमरः—न मा यस्य अस्ति-यस्य ममलक्ष्मीः नास्ति सोऽहं नमशब्दवाच्यः—लक्ष्मीहीनो दरिद्रोऽस्मि अत्र न संशयः ।

शिव शब्द का अर्थ कहकर नमः शब्द का अर्थ कहते हैं नहीं

है मा जिसके यहां मा शब्द लक्ष्मीवाचक है 'इन्दिरालोकमातामा' (अमरकोश) नहीं है मा जिसके जिस मुझमें लक्ष्मी नहीं है वह मैं "नम" हूँ-लक्ष्मीहीन" दरिद्र हूँ, इसमें सन्देह नहीं है।

कुत एतत्—हे लक्ष्मीश, मायेश, प्रकृत्यधिपते यतोहं देवः- दीव्यति, विजीगीषति, निराकर्त्तुमिच्छति-दरिद्रम्-अज्ञानम् इतिदेवः— दरिद्रंनिराकृत्य लक्ष्मीम् विद्याम् प्राप्नुमिच्छामि इत्यर्थः

कैसे ? हे लक्ष्मीश, मायेश, प्रकृतिके अधीश्वर क्योंकि मैं देव हूँ—दिवुधातु का विजिगीषाअर्थ में, दारिद्रय् को दूर करने की इच्छा रखता हूँ इस प्रकार दरिद्रका अर्थ अज्ञान है इस तरह का देव शब्द है। दारिद्रय् हटाकर लक्ष्मी यानी विद्या प्राप्ति की इच्छा करता हूँ।

तस्मात् मम ज्ञानाधिकारित्वात्मेमह्यम् विरक्ताय मुमुक्षवे अधिकारिणे प्रापयदेहि इत्यर्थ ।

इसलिए मेरे ज्ञानाधिकारी होनेसे, मुझ विरक्त मुमुक्षु अधिकारी को ज्ञान प्रदान करो।

इहैव अस्मिन् जन्मनि लक्ष्मीम् ऐश्वर्यम् इत्यर्थः किं तत् ऐश्वर्यम् इति अत आह-विद्याम्, आत्मविद्याम्सनातनीम् त्रिकालाबाध्याम् एकरसाम्-अपरिच्छिन्न रूपाम् साम्राज्य लक्ष्मीम् इत्यर्थः ॥१५॥

इसी जन्ममें लक्ष्मी अर्थात् ऐश्वर्य दो। कौनसा वह ऐश्वर्य है, कहते हैं-विद्या—आत्मविद्या, सनातनी तीनों कालमें अबाधित एक एकरसा—अपरिच्छिन्न रूपा साम्राज्य लक्ष्मी का मुझे प्रदान करो ॥१५॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

यस्मादानन्दरूपस्त्वं देवैर्वेदैर्निगद्यसे ।
तस्मान्मे देहि योगीश भद्रंज्ञानं सुभावनम् ॥१६॥

पदच्छेद—यस्मात्, आनन्दरूपः, त्वम्, देवैः, वेदैः, निगद्यसे, तस्मात्, मे, देहि, योगीश, भद्रं, ज्ञानं, सुभावनम् ॥१६॥

(अन्वयः)

यस्मात्	= जिसकारण	हे योगीश	=हे योगीश
त्वम्	तुम	तस्मात्	इस कारण
देवैः	देवताओं द्वारा	मे	मुझे
वेदैः	वेदों द्वारा	सुभावनम्	स्वरूपज्ञानकारण
(च)	भी	भद्रम्	आत्मानन्ददेनेवाला
आनन्दरूपः	आनन्दस्वरूप	ज्ञानम्	ज्ञान
निगद्यसे	कहे जाते हो	देहि	दो

एतमेवार्थं पद्यान्तरेणास्फुटयति यस्मादिति—यस्मात् त्वं देवैः ब्रह्मादिभिः वेदैश्च आनन्दरूपो निगद्यसे तस्मात् हे योगीश मे मह्यम् सुभावनम् स्वरूपा वगतिकारकम् भद्रम् आत्मानन्दप्रदम् ज्ञानम् आत्मसाक्षात्काररूपं देहि इति योजना ।

इसी अर्थ को दूसरे पद्य से स्पष्ट करते हैं यस्मात् आदि क्योंकि तुम ब्रह्मादिदेवताओं द्वारा, और वेदों द्वारा' "आनन्दरूप" कहे जाते हो—अतः हे योगीश ! मुझे स्वरूपको अवगत करानेवाला भद्र-यानी आत्मानन्द को देनेवाला आत्मसाक्षात्कार रूप ज्ञानका प्रदान करो, ऐसी योजना है ।

❋ ॐ नमःशिवाय ❋

यस्मात्त्वं नेतिनेतीति नञर्थं मासिवेदजम् ॥
तस्मान्नमोसि भद्रं मे यतोजातोऽनमोनमः ॥१७॥

पदच्छेद—यस्मात्, त्वम्, नेति, नेति, इति, नञर्थम, मासि, वेदजम, तस्मात्, नमः असि भद्रम्, मे यतः जातः अनमः नमः ॥१७॥

(अन्वय)

यस्मात्	= क्योंकि	नमः	= नमः
त्वम्	तुम	असि	हो
नेतिनेति	नेतिनेति	भद्रं	कल्याण
इति	इस प्रकार	मे (भूयात्)	मेरा होवे
वेदजम	वेद के	यतः (अहं)	क्योंकि मैं
नञर्थम्	नञर्थको	अनमः	अनमः से
मासि	नापते हो	नमः	नमः
तस्मात्	इस कारण	जातः	होगया ।

अथ सप्तमं व्याख्यानम्—यस्मात्त्वमिति–हे भगवन् ! यस्मात् कारणात् त्वम्वेदजम्–बृहदारण्यवेदोक्तम् नेतिनेतीति नञर्थमासि नञ्-विषयं निषेध्यजातम् सकल मूर्त्तामूर्त्तात्मकाकाशादि प्रपञ्चम् तद्वासनारूपंच अन्तःकरणाद्यध्यस्त प्रपञ्चम् मासिमानगोचरत्वाथादनेन व्यवहार विषयं करोषि-यथा मानपात्रं प्रस्थं व्रीहियवादिकंमाति, स्वात्मनि धारणेन निःसा रणेन च मानविषयं करोति स्वयं च निर्लेपस्तिष्ठति-तथा त्वमपि इवं जगद्

विवर्त्तरूपेण आत्मिनि अविर्भूतं तिरोभूतंच करोषि स्वयं च निषेधोद्दिष्ट इव स्वरूपतोऽसङ्गैकरसः सच्चिदात्मनातिष्ठसि।

अब सप्तम व्याख्यान कहते हैं—यस्मात् इत्यादि—हे भगवन् जिसकारण तुम बृहदारण्य वेद में कहे गये-नेति नेति ऐसा नञर्थ यानी नञ् का विषय, निषेध्य समूह, सम्पूर्ण रूपवान् रूपहीन, आकाशादि प्रपञ्च, और उनके वासनारूप अन्तःकरणादि अध्यस्त प्रपञ्च को तौलते हो, तौलकर व्यवहार मं लाते हो, जैसे तुला धान जौ आदि को तौलता है अपने में रखकर और निकालकर, और स्वयं निर्लेप रहता है, ऐसे तुम भी इस जगत् को विवर्त्तरूप से अपने में प्रकट और अप्रकट करते हो और स्वयं निषेध के वस्तु जैसे स्वरूपसे असङ्ग एक रस सच्चिदात्मा रूप से रहते हो।

दृष्टं चैतत् यथालोके महारजनं वासः, तत्र महारजनन्तु हरिद्रा तथा रक्तंवासः अपि महारजनं प्रोच्यते—एवंस्त्र्यादिविषय संयोगात् चित्तस्यापि वासनारूपं रञ्जनाकारमुत्पद्यतेतदेव नञा निषिध्यते तस्मात् नमः असि।

देखा जाता है जैसा लोकमें महारजन वस्त्र—"महारजन" हलदी का नाम है, उससे रंगा हुआ वस्त्र भी "महारजन" कहा जाता है इसी प्रकार स्त्री आदि विषय के संयोग से चित्त में भी वासना रूप रंग आ जाता है इसी को नञ् द्वारा निषेध करते हैं, अतः तुम 'नमः' हो।

कथं एवं निर्देश इति—अत आह–नेतिनेति एवं निर्देशः इदंच नकार द्वयं वीप्सार्थं-यद्यत् प्राप्तं तत्त्वन्निषिध्यते।

कैसे ऐसा निर्देश करते हैं–इस पर कहते हैं नेतिनेति ऐसा जो निर्देश–यह जो दो नकार हैं वीप्सा के लिए हैं जो जो आवे उस उस का निषेध करते हैं।

तथाच सर्वोपाधि निराकरणद्वारेण–सैन्धवघनवत् एकरसं प्रज्ञानघन ननन्तरमवाह्यम् सत्यस्य सत्यं ब्रह्माहमस्मि इति आत्मन्येव अवस्थिता प्रज्ञाभवति।

फिर सब उपाधियों का निराकरण करते हुए सेंध्र नमक के टुकड़े के समान एक रस प्रज्ञानघन भीतर बाहर से रहित, सत्यका भी सत्य ब्रह्म मैं हूँ ऐसी बुद्धि अपने में आप स्थिर हो जाती है।

कथमेवं ब्रह्मणोनिर्देशः—अत्राह-नह्येतस्मादिति नेत्यन्यत्परमस्तिहि यस्मात् इति न इति न इति एतस्मादन्यत् परं निर्देशनं–नामरूप रहितस्य आत्मनः वास्ति तस्मात् अयमेव निर्देशो ब्रह्मणः।

ब्रह्म का निर्देश ऐसा क्यों ? इसपर कहते हैं—क्योंकि ' इति न, इति न" इससे उत्तम नामरूप रहित आत्मा का अन्य कोई निर्देश हो नहीं सकता, इसलिए इसी प्रकार से ब्रह्म का निर्देश किया गया है।

अथ नाम धेयं ब्रह्मणः–नामैध नामधेयम्-किंतत् सत्यस्य सत्यम् "प्राणावैसत्यम् तेषामेपसत्यम्" इति नमः शब्दार्थः—तस्मात् नमः असि, सकलनिषेधाधिष्ठानत्वेन सर्वाश्रयोऽसि इत्यर्थः।

अब ब्रह्म का नामधेय कहते हैं-नाम ही नामधेय है-वह क्या ? सत्य का सत्य । प्राण ही सत्य है उसका यह सत्य है यह "नमः" शब्द का अर्थ है, अतः तुम "नमः" हो, सम्पूर्ण निषेधों के अधिष्ठानत्व के द्वारा सबका आश्रय हो, यह भाव है ।

एवम्भूतस्यते स्वरूपज्ञानात् मे मम अपि भद्रं कल्याणम् एव भविष्यति-कितत भद्रम् इति, अतआह—"यतोजातो ह्यनमोनमः"—यतः कारणात् अहम् अनमः परिच्छिन्न तया आत्मानं मन्यमानोऽपि नमो जातः स्वभावसिद्धापरिच्छिन्न स्वरूपो जातः । असर्वाश्रयः सर्वश्रेयो जात इत्यर्थः ॥१७॥

ऐसे जो तुम हो, तुम्हारे स्वरूप के ज्ञान से मेरा भी भद्र अर्थात् कल्याण होगा । वह कौनसा कल्याण है ? इस पर कहते हैं—जिस कारण से मैं "अनम" से परिच्छिन्नरूप अपने को मानते हुए भी "नमः" हो गया स्वभावसिद्ध अपरिच्छिन्न स्वरूप हो गया, असर्वाश्रय सर्वाश्रय हो गया ऐसा भाव है ॥१७॥

—ooo—

❀ ॐ नमःशिवाय ❀

शिवंशिवमथाप्राप्तः शिवायेतिनिगद्यसे ।
शिवायमे तथाप्राप्त्या शिवायं कुरु सर्वदा ॥१८॥

पदच्छेद—शिवम्, शिवम्, अथ, आप्राप्त, शिवाय, इति, निगद्यसे, शिवाय, मे, तथा, प्राप्त्या, शिवायं कुरु, सर्वदा ॥१८॥

(अन्वय)

शिवम्	= सर्वोपद्रवरहित को	हे शिवाय	हे शिवाय
शिवम्	निरतिशय आनन्द स्वरूप को	मे	मुझे
अथ	फिर	तथा	उस प्रकार
आप्राप्तः	परिपूर्ण रूप से प्राप्त हो	प्राप्त्या	बनाकर
शिवाय	शिवाय	सर्वदा	सर्वदा
इति	इसनामसे	शिवायं	परिपूर्णानन्द स्वरूप
निगद्यसे	कहे जाते हो	कुरु	करो

नमःशब्दार्थम् उक्त्वा–शिवशब्दार्थं आह-शिवंशिवमितिशिवं सकलोपद्रव रहितम्–पुनःशिवम्-निरतिशयाखण्डैकरसानन्दस्वरूपम्, आप्राप्तः–आ-समन्तात् परिपूर्णतया प्राप्तः शिवाय इति त्वं निगद्यसे प्रतिपाद्यसे शास्त्रैः।

नमः शब्दार्थ को कहकर, शिवाय शब्द के अर्थ को कहते हैं शिवं शिवं आदि–शिव, समस्त उपद्रवों से दूर, पुनः शिव=निरतिशय अखण्ड एकरस आनन्दस्वरूपको आप्राप्तः आ=हरप्रकार चारों ओर से यानी परिपूर्ण रूपसे प्राप्त तुम "शिवाय" कहलाते हो, शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित होते हो।

हे शिवाय—परिपूर्णानन्दस्वरूप, मे=मम, तथा प्राप्त्या शिवायत्वस्य परिपूर्णभावस्य प्राप्त्या माम् अपि सर्वदा परिपूर्णानन्द स्वरूपं कुरु, इत्यर्थः ॥१८॥

हे शिवाय परिपूर्णानन्दस्वरूप मेरी उस प्रकार की प्राप्ति से, शिवायत्व के परिपूर्ण भावकी प्राप्ति से मुझे भी सदा परिपूर्ण आनन्द स्वरूप करदो यह भाव है ॥१८॥

❀ ॐ नमः शिवाय ❀

शिवांयातो महाभद्र नमोऽहं माययाध्रुवम् ॥
ततो नमाय मह्यं मः शिवायं कुरु सर्वथा ॥१९॥

पदच्छेद—शिवां, यातः, महाभद्र, नमः, अहं, मायया, ध्रुवम्, ततः, नमाय, मह्यं, मः, शिवायं, कुरु, सर्वथा ॥१९॥

(अन्वय)	-	ततः	इस कारण
हे महाभद्र =	हे महाभद्र	मह्यम्	मुझ
मायया	मायाके द्वारा	नमाय	विद्याहीन के लिए
ध्रुवम्	निश्चित रूप से	सर्वथा	हर प्रकार से
नमः	विद्याहीन	मः	सब दृश्य वस्तुको
अहम्	मैं	शिवायं	आत्मस्वरूप से
शिवां	ब्रह्मविद्या के समीप		प्रकाशमान
यातः	गया	कुरु	करदो ।

अथाष्टम व्याख्यानम्—शिवां यात इति-शिवां शक्तिं ब्रह्मविद्यारूपां यातः अयासीत् इति शिवायः । तस्य सम्बोधने हे शिवाय ।

अब आठवां व्याख्यान—शिवां यातः आदि-शिवाकी अर्थात शक्ति की यानी ब्रह्मविद्या की शरण ली-ऐसे शिवाय शब्द के सम्बोधन में हे शिवाय।

अतएव हे महाभद्र, परमकल्याण रूप, त्वम् शिवाय असि, निज स्वरूपस्थः असि। अहं तु मायया अविद्यया-(प्रकृतिवाचकत्वेनप्रसिद्धस्य मायाशब्दस्य अविद्यावाचकत्वे प्रमाणम् "जीवेशा वाभासेन करोति मायाचाविद्याच स्वयमेव भवतीति")।

अतः हे महाभद्र, परमकल्याणरूप, तुम शिवाय हो अर्थात निजस्वरूपस्थ हो। मैं तो माया से यानी अविद्या से—प्रकृति वाचक रूप से प्रसिद्ध माया शब्दका अविद्यावाचकत्व में प्रमाण श्रुति वाक्य देते हैं-जीवेशौआदि-माया और अविद्या जीव और ईश्वर को आभास द्वारा करती है और माया अविद्या स्वयं ही होती है।

नमः अहं-न मा लक्ष्मीर्विद्या अस्ति इति नमः-अहं नमः निर्विद्यः अस्मि इति ध्रुवम् निश्चितम् इत्यर्थः।

नमः मैं हूँ, नहीं है 'मा'=लक्ष्मी अर्थात विद्या जिसकी वह मैं "नमः"=विद्याहीन हूँ यह ध्रुव=निश्चत् है।

यस्मादहं निर्विद्यः आत्मविद्याभिलाषी च, त्वंच पूर्णविद्यः शरणागत पालकश्च, सर्वज्ञत्वात् सर्वेश्वरत्वात् तत कारणात् नमाय निर्विद्याय मह्यम् मदर्थम् आत्मदर्शनाय इति यावत्।

क्योंकि मैं विद्याहीन, आत्मविद्याभिलाषी हूँ—सर्वज्ञ और सर्वेश्वर होने से तुम पूर्णविद्य और शरणागत पालक हो इस कारण

मुमुक्षु 'नमः' निर्विघ्न को आत्म दर्शन के लिए।

इदं मः, मःशब्दवाच्यम् सर्वदृश्यजातम्, इदन्ता विषयं शिवायं कुरु। कथं मःशब्दवाच्यं इदन्ताविषयं सर्वम् इत्यत्र–मः शब्दस्यव्युत्पत्तिरुच्यते–मसिपरिणामे दैवादिकः अस्य धातोःक्विपिरूपम्। मस्यति परिणमते विकार भावं गच्छतीति मः परिणामी, इदं सर्वदेहगेहादिप्रपञ्चजातम् शिवायंकुरू–भवद्रूपेणैव प्रकाशमानं यथास्यात्तथाकुरू। सर्वथा सर्वप्रकारेण त्वत्स्वरूपातिरेकेण अप्रतीयमानं कुरु इत्यर्थः।

यह "मः"। "मः" शब्द से दृश्यचराचर यानी इदन्ता विषय को अपने रूप से प्रकाशित करो। मः शब्द से इदन्ता विषय सबकुछ कैसे आया ? इस पर मः शब्द की व्युत्पत्ति कहते हैं। दैवादिक मसीपरिणामे धातुका क्विप् प्रत्ययान्तरूप "मः" है। मस्यति जिसका परिणाम होता है। यानी विकार भाव को प्राप्त होता है। वह मः = परिणामीसमस्त देहगेहादि प्रपञ्च आपके रूपसे जिस प्रकार प्रकाशमान हो ऐसा करो। सब प्रकारसे तुम्हारे स्वरूपसे भिन्न कुछ भी प्रतीयमान न हो ऐसा करो यह भाव है।

येनाऽहं त्वत्स्वरूपमेव इदन्ताविषये स्वात्मानञ्च पश्येयम् इत्यर्थः तथाचोक्तंस्मृतौ–वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः इत्यष्टमं व्याख्यानम् ॥१६॥

जिससे मैं अपने को और इदन्ता विषयमात्र को तुम्हारा ही स्वरूप देखूँ। स्मृति में कहा है "सब कुछ वासुदेव है" ऐसा जानने वाला महात्मा अत्यन्त दुर्लभ है। यह आठवां व्याख्यान है ॥१६॥

॥ ॐ नमःशिवाय ॥

शिवमेपि यतोज्ञप्त्या शिवायस्त्वं प्रपठ्यसे ।
नतेमाया यतोज्ञप्त्या नमोवेदैः प्रपठ्यते ॥२०॥

नमोऽहंच शिवायोऽहं नमो मह्यं नमोनमः ।
नमोनमाय शुद्धाय मंगलाय नमोनमः ॥२१॥

पदच्छेद—शिवम्, एषि, यतः, ज्ञप्त्या शिवायः, त्वम्, प्रपठ्यसे न, ते, माया, यतः, ज्ञप्त्या नमः वेदैः प्रपठ्यते ॥२०॥ नमः, अहं, शिवायः, अहं, नमः, मह्यम नमोनमः, नमः, नमाय, शुद्धाय, मङ्गलाय, नमोनमः ॥२१॥

(अन्वय)

ज्ञप्त्या	= ज्ञान से	माया	= माया
शिवम्	आनन्दस्वरूप को	यतः न	जिसकारणसे नहींहै
एषि	जानते हो	अतः	अतएव
(अतः)त्वम	इस कारण से तुम	ज्ञप्त्या(तयैव)	उसी ज्ञान से
शिवायः	स्वरूप द्रष्टा	वेदैः	वेदों द्वारा
प्रपठ्यसे	कहे जाते हो	नमः	नमः नाम से
ते	तुम्हारी	प्रपठ्यते	कहे जातेहो ॥२०॥

(अन्वय)

अहं	= मैं	नमः	नमस्कार
नमः	नमः हूँ	नमाय	नम के लिए
अहं	मैं	शुद्धाय	शुद्ध के लिए
शिवायः	शिवायः हूँ	मंगलाय	मंगल के लिए
नमः मह्यम	नमस्कार मुझे	नमो	नमस्कार
नमोनमः	बारम्बार नमस्कार	नमः	नमस्कार ॥२१॥

अथ नवमं व्याख्यानम्—शिवमेषीति—ज्ञप्तिः ज्ञानम्, स्वस्वरूपाविर्भावः, तयाज्ञप्त्या शिवम् निरतिशयानन्दरूपम् आत्मतत्त्वम्, एषि-जानासि, यतः कारणात्, अतः त्वम् शिवायः, इण् गतौ अस्य अण् प्रत्यये रूपम्। प्रपठ्यसे शास्त्रैः। तथा तयैव ज्ञप्त्या ज्ञानेन स्वरूप साक्षात्कारेण तेतव माया उपाधिः अविद्याच न विद्यते यतः कारणात् अतः त्वम् नमः प्रपठ्यसे—न विद्यते मा यस्य स नमः इन्दिरालोकमाता मा इति मा शब्देन लोकमाता जगत्कर्त्री प्रकृतिः अव्यक्तम् उच्यते।

अब नवम व्याख्यान कहते हैं शिवमेषि आदि "ज्ञप्ति" का अर्थ ज्ञान—अपने स्वरूप का आविर्भाव, उस ज्ञप्ति के द्वारा शिव का अर्थ "निरतिशयानन्दरूप आत्मे तत्त्व" उसको जानते हो इसके लिए तुम शिवाय हो, ऐसा शास्त्र कहते हैं। फिर उसी ज्ञप्ति यानी ज्ञान से अर्थात् स्वरूपसाक्षात्कार से, तुम्हारी माया उपाधि अविद्या भी तुममें नहीं है, इसलिए तुमको नमः कहते हैं 'मा' जिसका नहीं है वह नमः

इन्दिरालोकमाता मा इसके द्वारा मा शब्द से लोकमाता–जगत्कर्त्री प्रकृति–अव्यक्त को कहते हैं।

सा अखण्डाद्वैतैकरसानन्दस्वरूपस्य तव न विद्यते । अव्यक्तात्तु परः पुरुषः व्यापकः अलिङ्ग एव च इति श्रुतेः, इति वेदैः नमः प्रपठ्यसे ।

'वह' 'मा' अखण्ड अद्वैत एकरस आनन्द स्वरूप तुम्हारे में नहीं है । अव्यक्त से पर-पुरुष है वह व्यापक अलिङ्ग है; ऐसा श्रुति कहती है । अतः वेद में "नमः" ऐसा कहलाते हैं ।

उक्तस्य फलितमाह—नमोहमिति–अहमपिच त्वदनुगृहीतो ज्ञातात्म स्वरूपोऽस्मि, त्वद्व्यतिरिक्तम् न किञ्चिदात्मनि पश्यामि, त्वत्स्वरूपमेव सर्वं पश्यामि, एवम् एकात्मदर्शनात्–नमः अहम् निरविद्यः अहम । निर्गताऽविद्योपाधित्वात् शिवायः स्वरूप द्रष्टाच अहम । अतः मह्यम् मदर्थम् मत्प्रशंसार्थं मत्प्रशंसायै नमोनमः । नमोऽयम् , नमोऽयम् , निरविद्योऽयम निरविद्योऽयम इति वीप्सया नमः शब्द प्रयुज्यते अभिज्ञः इति शेषः ।

कहे हुए का सार कहते हैं—नमोहमिति–तुम्हारा अनुगृहीत होकर, मैंने भी, आत्मस्वरूप को जान लिया है । अपने में तुमसे भिन्न और कुछ भी नहीं देख रहा हूँ । सबकुछ तुम्हारा ही स्वरूप देख रहा हूँ । इस प्रकार एकात्म दर्शनसे, मैं नमः हूँ । मैं निरविद्य हूँ । अविद्या उपाधि से निकल जाने से स्वरूपद्रष्टा भी मैं हूँ । अतः मेरे लिए मेरी प्रशंसा के लिए नमोनमः । यह नम है, नम है, निरविद्य है, निरविद्य है, आनन्द जन्य ऐसी द्विरुक्ति द्वारा अभिज्ञ लोग नमः शब्द प्रयोग में लाते हैं ।

इदानीं आत्मलाभसन्तुष्टः उक्त विशेषणविशिष्टाय भगवते शम्भवे प्रणामं करोति नमो नमा येति-नमाय=अविद्यारहिताय अतएव शुद्धाय निर्विकाराय शुद्ध त्वादेव मङ्गलाय आनन्दप्रदाय नमोनमः ॥२१॥

अब आत्मलाभ से सन्तुष्ट जन कहे हुए विशेषणों से युक्त भगवान् शम्भू को प्रणाम करते हैं, नमो नमाय इत्यादि-नम यानी अविद्या रहित को, अतः शुद्ध निर्विकार को, शुद्ध होने से मङ्गल= आनन्ददायक को बारम्बार नमस्कार है ॥२१॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

नमो नमसनं शम्भो निराकाराय ते नमः ।
निर्गुणं निष्क्रियं शान्तं इत्याद्याःश्रुतयो जगुः ॥२२॥

पदच्छेद—नमः न मसनं शम्भो निराकाराय ते नमः निर्गुणं निष्क्रियं शान्तं इत्याद्याः श्रुतयः जगुः ॥२२॥

(अन्वय)

शम्भो !	= हे शम्भो	निष्क्रियं	= क्रियारहित
ते मसनम्	तुम्हारा विकार	शान्तम्	शान्त
न (अतः)	नहीं है इस कारण	इत्याद्याः	इत्यादि
नमः (असि)	नमः हो	जगुः	कहते हैं
श्रुतयः	वेदसमूह	निराकाराय	ऐसे निराकार
(त्वाम्)	तुमको	ते	तुम्हारे लिए
निर्गुणं	निर्गुण	नमः	प्रणाम है ॥

ॐ ॐ नमः शिवाय ॐ

नमो ब्रह्म निराकारं शिवायं शिव सर्वदा ।
अतोऽहंच नमाभद्र शिवायोऽहं न संशयः ॥२३॥

पदच्छेदः—नमः, ब्रह्म, निराकारं, शिवायं, शिव, सर्वदा, अतः अहं, च नमा भद्र शिवाय अहं न संशयः ॥२३॥

(अन्वय)

हे शिव	= हे शिव	हे भद्र	= हे भद्र
(त्वम्)	तुम	अहंच	मैं
निराकारं	निराकार	च	भी
शिवायं	परिपूर्ण	नमा	परिणाम रहित
सर्वदा	सदा	अहं	मैं
ब्रह्म	ब्रह्म	शिवाय(अस्मि)	परिपूर्ण हूँ
असि	हो	(अत्र) संशयः	इसमें संशय
अतः	इसलिए	न (अस्ति)	नहीं है ॥२३॥

पुनर्व्याख्यात नामानं प्रणमति–नमो न मसनम् इति–हे शम्भो ते तव मसनम् परिणाम आकार विशेषः न विद्यते । त्वं नमाअसि, अतः हे नमो निराकाराय ते तुभ्यं नमः इतिः ।

जिन नामों की व्याख्या कर चुके हैं उनको प्रणाम करते हैं—नमोनः इत्यादि हे शम्भो तुम्हारा परिणाम अर्थात् आकार विशेष नहीं है । इसलिए तुम नमा हो । अतः हे नमः निराकार तुमको नमस्कार है ।

निर्विकारत्वे श्रुतिं प्रमाणयति–निर्गुणं निष्क्रियं शान्तमित्यादि श्रुतयः त्वां निराकारं जगुः कथयाञ्चक्रुरित्यर्थः ॥२२॥

निर्विकारत्व के सम्बन्ध में श्रुति को प्रमाण मानते हैं-श्रुतियां तुमको निर्गुण, निष्क्रिय, शान्त इत्यादि द्वारा निराकार कहती हैं ।।२२।।

पुनर्विशिनष्टि नमोब्रह्म इति–हे शिव त्वं नमः शब्दोक्तं निराकारं शिवायं परिपूर्णं ब्रह्म असि । सर्वदा एक रसः असि तव पूर्णत्वात्, ममापि च त्वद्रूपत्वात् । अतः अहमपि नमः परिणामरहितः शिवायः परिपूर्णरूपश्च अहम् न संशयः । इति नवमं व्याख्यानम् ॥२३॥

पुनः विशेषरूप से कहते हैं–नमो ब्रह्म इत्यादि–हे शिव तुम नमः शब्द से कहे गये निराकार, शिवाय=परिपूर्ण ब्रह्म हो; सदा एकरस हो, तुम पूर्ण हो इसलिए, मैं भी तुम ही हूँ अतः मैं भी नमः=परिणाम रहित, शिवाय=परिपूर्ण रूप भी हूँ इसमें कोई संशय नहीं है यह नवम व्याख्यान हो गया ।।२३।।

व्याख्यान नवरत्नानां मालां विज्ञ मनोरमाम् ॥ श्रीमच्छंकर हृदभूषां-हरनामाभिधोव्यधात् ॥

❀ ॐ नमः शिवाय ❀

ज्ञानियों के लिए मनोरमा, शंकर के हृदय के भूषणरूप व्याख्यानरूपी नौ रत्नों की माला "हरनाम" नामक ने बनाया ।

❀ ॐ नमः शिवाय ❀

एवं पञ्चाक्षरी महामन्त्र व्याख्यानमुक्तम्-इदानीं शारीरक सूत्र भाष्य तात्पर्यगर्भितम् एतत्-इतिज्ञानाय शारीरक भाष्य संक्षिप्त तात्पर्यांशस्य अस्मिन् भाष्य व्याख्याने किञ्चिदन्तर्भूतत्वं वर्ण्यते ।

इस प्रकार पञ्चाक्षरी महामन्त्र का व्याख्यान कहा गया; अब यह भाष्य व व्याख्यान, शारीरक सूत्र व भाष्य तात्पर्य से भरा है उसको जानने के लिए, शारीरक भाष्य का संक्षिप्त तात्पर्यांश इस व्याख्यान में कैसे अन्तर्भूत है, उसका वर्णन करते हैं।

अथातो ब्रह्मजिज्ञासा-इति प्रथमाधिकरण सूत्रम्-तस्यायमर्थः। अथ इति-साधन चतुष्टय सम्पत्त्यनन्तरम् ।

"अथातो ब्रह्मजिज्ञासा"—यह प्रथम अधिकरण सूत्र है। उस का यह अर्थ है, अथ=साधन चतुष्टय सम्पत्ति के बाद–

अतः इति–यतः ब्रह्मातिरिक्तत्वेन भासमानस्य, अध्यस्तानित्य-प्रपञ्चस्य मिथ्यात्वात् तदधिष्ठान भूतं ब्रह्मैव सत्यम् अतः ब्रह्मज्ञानार्थं विचारः कर्त्तव्यः इति प्रथमाधिकरणार्थ उक्तः ।

अतः=क्योंकि ब्रह्ममें अतिरिक्त रूपसे प्रकट अध्यस्त अनित्य प्रपञ्च मिथ्या है, उसका अधिष्ठानभूत ब्रह्म ही सत्य है, इसलिए ब्रह्मज्ञानार्थ विचार करना चाहिए। यह प्रथमाधिकरण का अर्थ कहा गया।

तद्विचारार्थम् अध्यासश्च निरूपतिः—सच प्रथमव्याख्या नेऽन्तर्भूतः—तत्र "त्यजामीदमिदंसर्वं" इति इदन्ता विषयस्य अध्यस्त सर्वप्रपंचस्य निषेध द्वारा अखण्डानन्दैकस्वरूपस्य ब्रह्मण एव सत्यत्वेन निचार्यत्व निरूपणात् ॥१॥

उसके विचार के लिए अध्यासका भी निरूपण किया, वह प्रथम व्याख्यान में "त्यजामिदमिदंसर्वं" में, इदन्ताविषयक अध्यस्त समस्त प्रपञ्चका निषेध करते हुए अखण्ड़ानन्दैक स्वरूप ब्रह्म ही सत्य है वही विचारणीय है ऐसा निरूपण करते हुए आगया है ॥१॥

अथ प्रथमाधिकरणे ब्रह्मजिज्ञासितव्य मित्युक्तम्-किं लक्षणं पुनस्तद् ब्रह्म इत्याङ्काक्षायां द्वितीयाधिकरणसूत्रम् जन्माद्यस्य यतइति–

प्रथम अधिकरणमें ब्रह्म जिज्ञास्य है ऐसा कहा–उस ब्रह्मका लक्षण क्या है इस आकांक्षा के उत्तरमें द्वितीयाधिकरण सूत्र कहते हैं "जन्माद्यस्य यतः"।

अस्य जगतः नामरूपाभ्यां व्याकृतस्य कर्तृ भोक्तृ संयुक्तस्य मनसाप्यचिन्त्य रचनारूपस्य जन्मादि-जन्मस्थिति भंगंयतः सर्वज्ञात् सर्वशक्तेः कारणाद् भवति, तद् ब्रह्म इति वाक्य शेषः। इति द्वितीयाधिकरणार्थः—सच षष्ठ व्याख्यानेऽन्तर्भूतः। तत्र सकलजगत् कारणीभूत मायेशत्वस्य-निरूपणात् ॥२॥

नामरूप द्वारा प्रकाशित कर्त्ता भोक्तासे युक्त मनसे अचिन्तनीय रचनारूप इस जगत् का, जन्मादि=सृष्टि स्थिति प्रलय जिस सर्वज्ञ सर्वशक्ति कारणसे होता है वही ब्रह्म है। यही द्वितीय अधिकरण का अर्थ है और यह षष्ठ व्याख्यानमें आगया है। वहां सम्पूर्ण जगत् का कारणीभूत जो मायेशत्व उसका निरूपण करने से ॥२॥

द्वितीयाधिकरणे, "जगतः कारणं ब्रह्म"—इत्युक्तम्—तत्र हेतु भूतं तृतीयाधिकरणम् "शास्त्रयोनित्वात्" इति—ऋग्वेदादि शास्त्रस्य अनेक विद्यास्थानोपबृंहितस्य देवतिर्यङ् मनुष्य वर्णाश्रमादिव्यवहारहेतोः सर्वार्थावद्योतिनः सर्वज्ञ कल्पस्य योनित्वात्=कारणत्वात्।

द्वितीय अधिकरणमें "जगत् का कारण ब्रह्म" ऐसा कहा उसके हेतुस्वरूप तृतीयाधिकरण कहते हैं 'शास्त्रयोनित्वात्" अर्थात् अनेक विद्याओं द्वारा पुष्ट, देव तिर्यक् मनुष्य वर्ण आश्रम आदिका हेतुभूत समस्त पदार्थों को प्रकाशमें लाने वाला, सर्वज्ञ ही जैसा जो ऋग्वेदादिशास्त्र है वही कारण रूप है।

अस्ति हि पुरुष निःश्वासवत् तस्मात् महतोभूतात् योनेः अस्य शास्त्रस्य सम्भवः=प्रादुर्भावः=स्मरणम् इतियावत्।

उस महान् भूत रूपी कारण से पुरुष के निःश्वास जैसे इस शास्त्र की उत्पत्ति यानी प्रादुर्भाव हुआ ऐसा जाना जाता है।

अथवा शास्त्रं योनिः कारणं यस्य ब्रह्मणः यथावत्-स्वरूपाधिगमे–इति तृतीयाधिकरणस्यार्थः–सच षष्ठ व्याख्याने अन्तर्भूतः–तत्र "अस्मिन् शेते जगत्सर्वं" इत्यादिना सर्वकारणत्वस्य तथा यस्मदानन्द रूपस्त्वं देवैर्वेदैर्निगद्यसे–इति शास्त्रयोनित्वस्य उभयविधस्य निरूपणात् ॥३॥

अथवा ब्रह्मके यथार्थ स्वरूप ज्ञानमें शास्त्र कारण है–यह तृतीयाधिकरण का अर्थ है। यह षष्ठ व्याख्यान में कहा गया है। वहां "अस्मिन्शेते जगत्सर्वं" इत्यादिके द्वारा-सर्व कारणत्व का और "यस्मादानन्दरूपस्त्वं देवैर्वेदैर्निगद्यसे" इसके द्वारा दोनों प्रकार शास्त्र योनित्व का निरूपण किया है ॥३॥

तृतीयाधिकरणे ब्रह्मणःशास्त्रयोनित्वमुक्तम् तत्रहेतुत्वेन चतुर्थाधिकरणमाह—"तत्तु समन्वयात्" इति । तत्तु ब्रह्म–सर्वशक्ति जगदुत्पत्तिस्थितिलय कारणम्, वेदान्त शास्त्रा दवगम्यते इति, कथम्, समन्वयात् ।

तृतीयाधिकरण में ब्रह्मका शास्त्रयोनित्व कहा–उसके कारणरूपसे चतुर्थ अधिकरण कहते हैं "तत्तु समन्वयात्"। सर्वशक्ति जगत् के सृष्टि पालन संहार के कारण वह ब्रह्म वेदान्त शास्त्र से जाना जाता है। कैसे ? समन्वय से।

सर्वेषुहिवेदान्तेषु वाक्यानि तातार्येणैव तस्यार्थस्य प्रतिपादकत्वे समनुगतानि तान्येवाह–सदेवसौम्येदमग्र आसीत् एकमेवा-

द्वितीयम् इत्यादीनि, यस्मात् सर्ववेदान्तानां ब्रह्मण्येव समन्वयः तस्मात् सर्वजगज्जन्मादिकारणं सर्वज्ञं सर्वशक्तिच ब्रह्मैव इति चतुर्थाधिकरणार्थः सच षष्ठव्याख्यानेऽन्तर्भूतः ।

समस्त उपनिषदों में जो वाक्य हैं तात्पर्य से ही सब उसी अर्थ के प्रतिपादक हैं उनको ही कहते हैं सदेव सौम्येदमग्र आसीत् एकमेवाद्वितीयम् इत्यादि । जिस कारण से सब वेदान्तों का ब्रह्म में ही समन्वय है इसलिए समस्त जगत् के उत्पत्ति आदिका कारण, सर्वज्ञ और सर्व शक्ति ब्रह्म ही है यह चतुर्थ अधिंकरण का अर्थ है जो कि षष्ठ व्याख्यान में कहा है

तत्र तदानाच्छिव इत्युक्तं कारणं ब्रह्मतत्पराः इति ब्रह्मण एव सर्वकारणत्व निरूपणात् ॥४॥

वहां तद्दानाच्छिव इत्युक्तं कारणं ब्रह्म तत्परः इस से—सबका कारण ब्रह्म ही है यह निरूपण किया गया ॥४॥

एवं चतुः सूत्र्यां चतुर्भिरधिकरणैर्ब्रह्मण एव सर्वज्ञत्वेन सर्वशक्तिमत्त्वेन जगत्कारणत्वेन सर्वाधिष्ठानतया सत्यत्वे निश्चिते तद्विज्ञानार्थं विचारः कर्त्तव्य इति निरूपितं भवति ।

इस प्रकार चतुः सूत्री में चार अधिकरणों द्वारा सर्वज्ञत्व सर्वशक्तिमत्व जगत्कारणत्व सर्वाधिष्ठानत्व से ब्रह्म ही सत्य है ऐसा निश्चित होने पर उसको जानने के लिए विचार करना चाहिए ऐसा निश्चय होता है ।

तत्र अन्यस्यापि कस्यचित् जगत्कारणत्वं संभवति नवा इति संशयनिरासार्थंपञ्चमाधिकरणसूत्रम् "ईक्षतेर्नाशब्दम्" इति ।

दूसरा किसीका भी जगत्कारणत्व सम्भव है कि नहीं इस संशय को दूर करने के लिए पञ्चमाधिकरण सूत्र "ईक्षतेर्नाशब्दम" इति ।

ननुप्रधानस्य अनेकात्मकस्य परिणामसम्भवात् अनेकात्मक जगत्कारणत्वायेपत्तिर्मृदादिवत् । न असं इतैकारात्मकस्य ब्रह्मणः इत्येवं प्राप्ते, सूत्रम् ईक्षतेर्नाशब्दम् इति ।

शंका करते हैं अनेकात्मज जो प्रधान, (त्रिगुणात्मिका प्रकृति लक्ष्य है) उसका परिणाम सम्भव होने से अनेकात्मज जगत्कारण हो, मृदादि जैसे अलग रहते हुए एकात्मक ब्रह्मका नहीं इसके समाधान के लिए यह सूत्र है "ईक्षतेर्नाशब्दम्" ॥

न सांख्य परिकल्पित मचेतनं प्रधानं जगत्कारणं शक्यं वेदान्तेथाश्रयितुम् । यतः अशब्दंहितत्—न जगत्कारणत्वेन वेद प्रतिपादितम् । कुतः प्रधानस्य अशब्दत्वम्, ईक्षतेः इक्षितृत्व-श्रवणात्कारणस्य ।

वेदान्तमें सांख्यपरिकल्पित अचेतन प्रधान को जगत् कारण नहीं बना सकते हैं। क्योंकि वह अशब्द है—वेद द्वारा जगत्कारणत्व से प्रतिपादित नहीं है। प्रधानका अशब्दत्व कैसे ? ईक्षति से श्रुतिमें कारण का ईक्षितृत्व है।

कथम् ? एवंहिश्रूयते, सदेवसौम्येदमग्र आसीत् एकमेवाद्वितीयम् इत्युपक्रम्य तदैक्षत बहुस्यांप्रजायेय इतिकारणस्य ईक्षितृत्वश्रवणात्, जड़स्य प्रधानस्य तदसम्भवात्—प्रधानं न जगत्कारणंमिति पञ्चमाधिकरणार्थः ।

कैसे ? ऐसी श्रुति है"—सदेवसौम्येदमग्रआसीत् एक मेवाद्वितीयम्" से लेकर "तदैक्षत बहुस्यां प्रजायेय" आदि, इसमें कारण का ईक्षितृत्व कहा गया है । जड़ प्रधान से यह संभव नहीं है अतः प्रधान जगत्कारण नहीं है यही पंचम अधिकरण का अर्थ है ।

स च षष्ठ व्याख्यानेऽन्तर्भूतः तत्र "अस्मिन्छेते जगत्सर्वं तन्मयं शब्दगामियत् । तद्धानाच्छिन्न इत्युक्तं कारणं ब्रह्मतत्पराः ।" इति प्रधान शब्दवाच्याव्यक्तस्य ब्रह्माधीनत्वनिरूपणात् ब्रह्मणश्च-कारणत्वनिरूपणात् इति ।

यह षष्ठ व्याख्यान में आगया, उसमें—"अस्मिन् शेते जगत् सर्वं तन्मयं शब्दगामियत् । तद्धानाच्छिवइत्युक्तं कारणे ब्रह्म तत्पराः ।" प्रधानशब्दकावाच्य जो अव्यक्त है, वह ब्रह्म के अधीन है; और ब्रह्म को कारण कहा है ।

शेषेषु षड़धिकरणेषु आनन्दमयत्वादित्यन्तर्गतित्वाकाश ज्योतिःप्राणादि शब्दप्रतिपाद्यत्वादीनितस्यैव परमात्मन उक्तानि तेषामपि तत्रैवान्तर्भाव इति ॥१॥

बचे हुए छः अधिकरणों में, आनन्दमयत्वात् इसके अन्तर्गतत्व आकाश ज्योतिःप्राण आदि शब्द प्रतिपाद्यत्व आदि उसी परमात्मा का कहा है। उनका भी इसी में अन्तर्भाव है ॥१॥

अथ प्रथमाध्यायस्य द्वितीयपादे सप्तभिरधिकरणैः अस्पष्ट ब्रह्मलिंगैः ब्रह्मणएव उपास्यत्व मुक्तम्। प्रधान जीवादीनांनोपास्यत्व मिति चोक्तम् तच्च द्वितीय व्याख्यानेऽन्तर्भूतम् तत्र "नमामि देवदेवेशं सकामोऽकाम एववा" इति ब्रह्मण एव उपास्यत्व निरूपणात् ।

प्रथम अध्याय के द्वितीयपाद में सात अधिकरणों के द्वारा ब्रह्मका उपास्यत्व कहा है। प्रधान जीव आदि का उपास्यत्व नहीं है ऐसा भी कहा है। यह सब द्वितीय व्याख्यान में आगया उसमें–नमामि-देवदेवेशं सकामोऽकामएववा" कहकर ब्रह्म ही उपास्य है ऐसा निरूपण किया है।

अथ प्रथमाध्यायस्य तृतीयपादे चतुर्दशभि रधिकरणैर्ब्रह्मणः सर्वाधिष्ठानत्वं, श्रेष्ठत्वं, अक्षरशब्द वाच्यत्वम्, प्रणवेन उपास्यत्वं, प्रकाशकत्वं, विज्ञानमयादि शब्दवाच्यत्वं चोक्तम्। तच्चसप्तम व्याख्यानेऽन्तर्भूतम्। तत्र, शिवंशिवमथाप्राप्त इत्यादिना-श्रेष्ठत्वादेःसर्वरूपस्य सर्वाधिष्ठानत्वस्य च निरूपणात् ।

प्रथमाध्याय के तृतीय पाद में चौदह अधिकरणों से ब्रह्म का सर्वाधिष्ठानत्व, श्रेष्ठत्व, अक्षर शब्दवाच्यत्व, प्रणवसे उपास्यत्व,

प्रकास्यत्व, प्रकाशकत्व विज्ञानमय आदि शब्द वाच्यत्व, कहा गया है। यह सब सप्तम व्याख्यान में आगया है। उसमें शिवंशिवमथाप्राप्त आदि से, श्रेष्ठत्व आदि का सर्वरूपका सर्वाधिष्ठानत्वका भी निरूपण किया गया है।

प्रथमाध्यायस्य चतुर्थपादे—अष्टाभिरधिकरणैः पुनः प्रधान कारणतानिराकरण पूर्वकं ब्रह्मण एवकारणत्व मुक्तम्। तत्तुषष्ठव्याख्यानेऽन्तर्भूतम् तत्रापि प्रधानस्य ब्रह्माधीनता निरूपण द्वारा ब्रह्मण एव सर्वकारणत्व निरूपणात्।

प्रथम अध्याय के चतुर्थपाद में आठ अधिकरणों द्वारा फिर प्रधान के कारणत्व को निरस्त करके ब्रह्मका ही कारणत्व कहा है। यह सब षष्ठ व्याख्यान में आगया। प्रधान ब्रह्मके अधीन है ऐसा निरूपण वहां भी करके ब्रह्मका ही सर्व कारणत्व निरूपण किया है।

॥ इति प्रथमाध्यायव्याख्या समाप्ता ॥

॥ प्रथमाध्याय की व्याख्या हो गयी ॥

अथ अविरोधाख्य द्वितीयाध्यायस्य प्रथमेपादेत्रयोदशभिरधिकरणैः सांख्यस्मृत्यादि विरोधपरिहारं कृत्वा, निर्गुणस्यापि ब्रह्मणः विवर्त्ताधिष्ठानत्वेनप्रकृतित्त्वं निमित्तत्वं च साधितम् तत्तु षष्ठसप्तम व्याख्यानयोरन्तर्भूतम्। तत्र षष्ठव्याख्याने प्रकृतेः स्वातन्त्र्यनिषेध द्वारा ब्रह्मणःकारणत्व विधानात्। सप्तमेच—

"यस्मात्त्वं नेतिनेतीति नञर्थं मासिवेदजम्" इत्यनेन विवर्ताधिष्ठानत्व प्रतिपादनेन असङ्गत्वनिरूपणात् ॥१॥

अविरोध नामक द्वितीय अध्यायके प्रथम पाद में, तेरह अधिकरणों से—सांख्य स्मृति आदि का विरोध परिहार करके, निर्गुण ब्रह्मका भी विवर्त्ताधिष्ठानत्वसे प्रकृतित्व और निमित्तत्व साधन किया गया यह षष्ठ सप्तम व्याख्यानों में आगया। षष्ठव्याख्यान में प्रकृति का स्वातन्त्र्यनिषेधकरके ब्रह्मका कारणत्व विधान से सप्तम में "यस्मात्त्वंनेतिनेतीति नञर्थं मासिवेदजम्" इसके द्वारा विवर्त्ताधिष्ठानत्व प्रतिपादन करके असंगत्व निरूपण करने से ॥१॥

द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयपादे—अष्टभिरधिकरणैः सांख्यादिबौद्धान्तानां मतस्य खण्डनं तच्च चतुर्थव्याख्यानेऽन्तर्भूतम्। तत्र "शिवोब्रह्मादिरूपः स्याच्छक्तिभिस्तिसृभिः सह" इति सर्वस्य प्रकृत्यन्तस्य अध्यस्तत्व प्रतिपादनेन अखण्डैकरस तुरीयात्मन एव वास्तवत्व प्रतिपादनात्—देहादिबुद्ध्यन्त प्रपञ्चस्य अध्यस्तत्वेन आभासमानमात्रत्वप्रतिपादने नानात्मत्व निरूपणात् तन्निराकरणेनैव सांख्यादीनामपि निराकृतत्वात् तेषां तन्मात्रात्मत्व मानित्वात् प्रधान परमाण्वादीनांप्रकृत्यन्तर्गतत्वात् आत्मन एव वास्तवत्व प्रतिपादनेन शून्यत्वादि मतस्य निराकृतत्वात् ॥२॥

द्वितीय अध्याय के द्वितीयपाद में आठ अधिकरणों द्वारा-सांख्य से लेकर बौद्ध पर्यन्त मतों का खण्डन है। वह चतुर्थ व्याख्यान में

आगया। उसमें "शिवोब्रह्मादिरूपः स्याच्छक्तिभिस्तिसृभिःसह" इससे प्रकृतिपर्यन्त सम्पूर्ण पदार्थ के अध्यस्तत्व प्रतिपादन के द्वारा अखण्ड एकरस तुरीयात्मा का ही वास्तवत्व प्रतिपादन से देहादिबुद्धि पर्यन्त प्रपञ्चका अध्यस्तत्वसे, आभास मात्रत्व के प्रतिपादन में नानात्मत्व जो निरूपण किया है उसके निराकरण से ही सांख्यादिमतों का निराकरण हो जाने से उनका तन्मात्रात्मत्व मानी होनेसे, प्रधानपरमाणु आदि का प्रकृति के अन्तर्गत होनेसे, आत्माही वास्तव है, इसका प्रतिपादन होने से शून्यवादि का मत निरस्त हो जाने से ॥२॥

द्वितीयाध्यायस्य तृतीय पादे सप्तदशभिरधिकरणैः—आकाशस्य अनित्यत्वं, स्वरूपवतो ब्रह्मणो वायोरुत्पत्तिः—एवं क्रमेण ब्रह्मणोजगज्जनकत्वं जीवस्य ब्रह्मरूपत्वं चोक्तम्।

द्वितीयाध्याय के तृतीयपाद में सत्रह अधिकरणों से, आकाश का अनित्यत्व स्वरूपवान् ब्रह्मासे वायु की उत्पत्ति-ऐसे क्रमसे ब्रह्म का जगज्जनकत्व और जीवका ब्रह्मरूपत्व कहा।

तच्च षष्ठ सप्तम व्याख्यानयोरन्तर्भूतम्। तत्र ब्रह्मण एव सर्वकारणत्व प्रतिपादनेन—आकाशादीनां जन्यत्वेन अनित्यत्व प्रतिपादनात्। तथा—शिवायमे तथा प्राप्त्या शिवायं कुरु सर्वदा इति जीवस्य ब्रह्मरूपत्वनिरूपणात् ॥३॥

यह सब षष्ठ सप्तम व्याख्यान में आगया। उसमें ब्रह्मका ही सर्वकारणत्व प्रतिपादनके द्वारा जन्य होने से आकाश आदिका अनि-

त्यत्व प्रतिपादन करने से और "शिवायमे तथा प्राप्त्या शिवायं कुरु सर्वदा', इससे जीवका ब्रह्मरूपत्व निरूपण किया है ॥३॥

द्वितीयाध्यायस्यचतुर्थपादे नवभिरधिकरणैः इन्द्रियाणा मात्म समुत्पन्नत्वं परिच्छिन्नत्त्वं देवताधीनत्वं मीश्वरस्यैवच प्राणादिनिम्मातृत्वमुक्तम् तच्च चतुर्थव्याख्यानेऽन्तर्भूतम् । तत्र शिवस्य ब्रह्मादिरूपत्व प्रतिपादनेन प्राणेन्द्रियादिकारणत्व निरूपणात् ॥४॥

॥ इति द्वितीयोऽध्याय ॥

द्वितीयाध्यायके चतुर्थपादमें नौ अधिकरणों द्वारा इन्द्रिय समूह आत्मा से उत्पन्न हुए हैं परिच्छिन्त हैं देवताधीन हैं, प्राणादि के निर्म्माता ईश्वर हैं कहा है । यह चतुर्थ व्याख्यानमें आगया । उसमें शिवका ब्रह्मादिरूपत्व प्रतिपादन करके प्राण और इन्द्रियादि का कारणत्व निरूपण करने से । ४॥

॥ द्वितीय अध्याय हुआ ॥

अथ साधनाख्य तृतीयाध्यायस्य प्रथमे पादेषडभिरधिकरणैर्जीवस्य भाविशरीरबीजरूप भूतसूक्ष्मवेष्टितस्यैव इतोगमनम् । आरोहण मवरोहणं च सस्यादौ जीवस्य न जन्म किन्तु संश्लेप मात्रम् प्रथमा हुतौ श्रद्धाशब्देन अपां प्रतिपादनम् उपासनाफल भोक्तृत्वंच उक्तम् । तच्च चतुर्थ व्याख्यानेऽन्तर्भूतम् तत्र शिवोब्रह्मादिरूपःस्यात् इत्यादिना पञ्चाग्नि विद्यादि गन्तव्य ब्रह्मलोकाद्यधिष्ठातृत्वस्यपरात्मनः शिवस्यैव निरूपणात् । अर्थं धर्म्मंच कामंच

वाञ्छँश्च जगदीश्वरम् इति सकल कर्म्मोपासना फलभोग्य प्रदत्व स्यापि परमेश्वरस्यैव निरूपणात् ॥१॥

साधन नामक तृतीय अध्याय के प्रथमपाद में छः अधिकरणों से जीव भूतसूक्ष्मवेष्टित होकर, जो कि भविष्य शरीरका बीजरूप है, यहां से जाता है। आरोहण, अवरोहण, सस्यादिमें जीवका जन्म नहीं होता है केवल संश्लेष होता है। प्रथमाहुति में श्रद्धा शब्दसे जल का प्रतिपादन और उपासना फलका भोक्तृत्व कहा गया है। यह चतुर्थ व्याख्यान में आगया, वहां "शिवोब्रह्मादिरूपःस्यात् "इत्यादि से पंचाग्नि विद्याआदि गन्तव्य ब्रह्मलोक आदिका अधिष्ठातृत्व परमात्मा शिव ही का कहा गया है। अर्थं धर्म्मंच कामंच वाञ्छँश्च जगदीश्वरम्" इससे, समस्त कर्म्म उपासना का फल जो भोग्य है उसका देने वाला परमेश्वर ही है ऐसा निरूपण करने से ॥१॥

अथ साधनाख्य तृतीयाध्यायस्य द्वितीयपादे अष्टभिरधिकरणैः ब्रह्मणः असंगत्वनिरूपणाय स्वप्नादि सृष्टेर्म्मिथ्यात्वं ब्रह्मणोनिषेधातीतत्वेन सत्यत्व तदन्यस्य अवस्तुत्वंच, कर्म्मफलोत्पत्तिंप्रति ईश्वरस्यैवकर्त्तृत्वं नापूर्वस्य इत्यादिप्रतिपादितम् तच्च द्वितीय व्याख्यानेऽन्तर्भूतम् तत्र नमामिदेवदेवेशं सकामोऽकाम एववा इति ब्रह्मण एव सर्वकामप्रदत्वनिरूपणात् ॥२॥

अब साधन नामक तृतीय अध्याय के दूसरे पाद में आठ अधिकरणों द्वारा ब्रह्म के असङ्गत्व निरूपण के लिए, स्वप्नादि सृष्टि का

मिथ्यात्व ब्रह्मनिषेधातीत होने से सत्य है तद्‌भिन्नवस्तुका अभाव कर्म्म-फलकी उत्पत्ति में ईश्वरका ही कर्त्तृत्व अपूर्वका नहीं इत्यादि प्रतिपादन किया है वह द्वितीय व्याख्यान में आ गया। उसमें "नमामि देव-देवेशं सकामोऽकाम एववा" इसके द्वारा ब्रह्म ही सर्वकामप्रद है ऐसा निरूपण करने से ॥२॥

अथ तृतीयाध्यायस्य तृतीयपादे षट्त्रिंशद्भि रधिकरणैः छान्दोग्य बृहदारण्यश्रुत्युक्तयोःपंचाग्निविद्योपासनयोः विध्यनुष्ठानफलसाम्येन एकत्वं, गुणोपसंहारस्य कर्त्तव्यत्वं, नानोपासना-कथनं विकल्पेन समुच्चयेन वा प्रतीकोपासनायां स्वच्छिकत्वम्, विकल्प समुच्चययोर्यथाकाम्यंचोक्तम्। तच्च द्वितीयव्याख्यानेऽन्त-र्भूतम्। तत्र ईश्वरस्य सर्वकर्म्मफलप्रदत्व निरूपणात् उपासना-प्रकाराणां च ईश्वराराधनत्वात् ॥३॥

तृतीय अध्याय के तृतीय पाद में छत्तीस अधिकरणों द्वारा छान्दोग्य और बृहदारण्यकोक्त दोनों पञ्चाग्नि विद्योपासनाओं का विधि, अनुष्ठान और फलसाम्य होने से एकत्व, गुणोपसंहार का कर्त्तव्यत्व, नाना उपासना का कथन, विकल्प या समुच्चय से प्रतीकोपासना में स्वैच्छिकत्व, विकल्प और समुच्चय का यथाकाम्य कहा। यह द्वितीय व्याख्यान में आगया। उसमें ईश्वर का सर्वकर्म्मफलप्रदत्व निरूपण करने से उपासना के प्रकारों का ईश्वराधनात्व होने से ॥३॥

अथ तृतीयाध्यायस्य चतुर्थपादे सप्तदशभिरधि करणैः आत्मज्ञानस्य स्वतन्त्रत्वम् आत्मबोधस्य कर्मानपेक्षत्वं, विद्यायाः स्वोत्पत्तौ कर्म्मसापेक्षत्वं, भ्रष्टोर्द्ध्वरेतसः प्रायश्चित्तस्य आमुष्मिकशुद्धिजनकत्वं व्यवहारहित्व जनकत्वम् सालोक्यादि मुक्तीनां सातिशयत्वं निर्वाण मुक्तेश्च निरतिशयत्व मुक्तम्। तच्च चतुर्थ व्याख्यानेऽन्तर्भूतम्। तत्र ईश्वरस्य ब्रह्मादिरूपत्वस्य शुद्धस्वरूपत्वस्यच निरूपणात् ॥४॥

॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥

तृतीयाध्याय के चतुर्थपाद में सत्रह अधिकरणों द्वारा आत्मज्ञानका स्वतन्त्रत्व, आत्मबोधकानिरपेक्षत्व, विद्याकी उत्पत्ति में कर्म्मसापेक्षत्व, भ्रष्ट ऊर्ध्वरेता के प्रायश्चित्तका आमुष्मिक शुद्धिजनकत्व, व्यवहार योग्यता जनकत्व, सालोक्यादि मुक्तियों का सातिशयत्व, और निर्वाण मुक्तिकानिरतिशयत्व कहा गया है। यह चतुर्थ व्याख्यान में आगया। वहां ईश्वरका ब्रह्मादिरूपत्व को, शुद्ध स्वरूपत्व को भी निरूपण द्वारा ॥४॥

॥ तृतीय अध्याय हुआ ॥

अथ फलाख्य चतुर्थाध्यायस्य प्रथमपादे चतुर्दशभिरधिकरणैः श्रवणादीना मावर्त्तनीयत्वम्; उपासनाया मासनस्य नियतत्त्वं;

ध्यानसाधनस्यैकाग्र्यस्य प्रधानत्वात्, दिग्देशकालानामनियमः, ज्ञानिनां पुण्यपापलेपाभावः, प्रारब्धस्य भोगेननाशः, संचित कर्म्म विनाशः, ज्ञात्राजीवने स्वात्मतया ब्रह्मणोग्राह्यत्वम्, प्रतीके अहं-दृष्ट्यभावः, नित्यकर्म्मणः तारतम्येन विद्यमानत्वम्, अधिकारिणां मुक्ति सद्भाव इत्याद्युक्तम् । तच्च चतुर्थव्याख्यानेऽन्तर्भूतम् । तत्र ध्येयं तत्त्वं विवेकतः इति विवेकादि द्वारा ध्यान समाध्यादि पूर्वकत्वेन मुक्तेर्निरूपणात् ॥१॥

फल नामक चतुर्थ अध्याय के प्रथम पाद में चौदह अधिकरणों द्वारा, श्रवणादिका आवर्त्तनीयत्व, उपासना में आसन का नियतत्व, ध्यानका साधन जो एकाग्रता है उसका प्राधान्य होने से दिशा स्थान काल का अनियम ज्ञानिओं को पुण्यपाप लेप का अभाव प्रारब्ध का भोगसे नाश, ज्ञाता जीवके द्वारा ब्रह्मको अपनी आत्मा जैसे ग्राह्यत्व प्रतीक में अहंदृष्टिका अभाव, नित्यकर्म्मका तारतम्य से विद्यमानत्व, अधिकारियों का मुक्त होना, इत्यादि कहा है । यह सब चतुर्थ व्याख्यान में आगया । वहां "ध्येयंतत्त्वंविवेकतः" इससे विवेक आदि द्वारा ध्यान समाधि आदि पूर्वक मुक्तिका निरूपण किया गया है । ॥१॥

चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयपादे एकादशभिरधिकरणैः वागादीनां मनसि वृत्तिलयोनस्वरूपतः तत्त्वविदो वागादीनां परमात्मनि निःशेषेण लयः – उपासकानां मर्ध्नस्थानादेव उत्क्रमणं, तेषां

निशायामपि मृतानां रश्मिप्राप्तिः, तत्त्वविदःप्राणानोत्क्रामन्ति इत्याद्युक्तम् । तच्च चतुर्थव्याख्यानेऽन्तर्भूतम् । तत्र ब्रह्मादि-रूपिणो निर्गुण स्वरूपिणश्च परमात्मनो निरूपणात्—उक्तफल-प्रदत्त्वस्य तत्र अनायासेन सम्भवात् ॥२॥

चतुर्थ अध्याय के दूसरे पाद में ग्यारह अधिकरणों द्वारा, वाक् आदि का वृत्तिलय मनमें, स्वरूपतः नहीं, तत्त्वविदों का वाक् आदि निःशेषरूप से परमात्मा में लय होता है। उपासकों का ऊर्ध्व स्थान से ही उत्क्रमण होता है रात्रि में उनकी मृत्यु होने पर भी रश्मि-प्राप्ति होती है। तत्त्वविदों का प्राण उत्क्रमण नहीं करता आदि जो कहा है वह चतुर्थ व्याख्यान में आगया। वहां ब्रह्मादिरूपी और निर्गुण रूपी परमात्मा का निरूपण किया है, पूर्वोक्त फलप्रदत्व उनमें अना-यास ही सम्भव होने से ॥२॥

अथ चतुर्थाध्यायस्य तृतीयपादे षड्भिरधिकरणैः अर्चिरा-दिकत्स्य ब्रह्मलोक मार्गस्य एकत्वम् । उत्तरमार्गेण कार्यब्रह्म-गमनम्, प्रतीकोपासकानां ब्रह्मलोकाप्रापणम् तेषां देवतान्तरोपास-कत्वात् तत्तल्लोकगमनम् इत्याद्युक्तम् । तच्च चतुर्थ व्याख्यानेऽन्त-र्भूतम् । तत्र "शिवोब्रह्मादिरूपःस्यात्" इति सर्वसामर्थ्यस्य अर्थं धर्म्मंच कामंच वाञ्छँश्च परमेश्वरम् इति सगुणोपासनस्य

निर्गुणोपासनस्य च फलप्रदातृत्वस्य परमेश्वरस्यैव निरूपणात्॥३॥

चतुर्थ अध्यायके तीसरे पाद में छः अधिकरणों के द्वारा अर्चिः आदि ब्रह्मलोक मार्ग का एकत्व । उत्तरमार्ग से कार्यब्रह्मगमन । प्रतीकोपासकों को ब्रह्मलोक की अप्राप्ति अन्य देवता के उपासक होने से उन उन देव-लोकों में गमन इत्यादि कहा गया है वह चतुर्थ व्याख्यान में आगया। वहां "शिवो ब्रह्मादिरूपःस्यात्" इससे सर्वसामर्थ्यका-"अर्थं धर्म्मंच कामंच वाञ्छँश्चपरमेश्वरम्" इससे सगुणोपासन का, निर्गुणोंपासनका फलप्रदातृत्व परमेश्वर का ही है ऐसा निरूपण करने से ॥३॥

अथ चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थपादे मुक्तिरूपस्य वस्तुनः पुरात-नत्वम्-मुक्तस्यच ब्रह्मणः अभिन्नत्वम् । मुक्तस्वरूपभूतस्य ब्रह्मणः युगपत् सविशेष निर्विशेषत्वम् । अर्चिरादि मार्गेण ब्रह्मलोक प्राप्तस्य उपासकस्य भोगवस्तूनां सृष्टौ मानससंकल्पस्यैवहेतुत्वम् । देहान्तर सृष्टावपि ऐच्छिकम् । जगत् सृष्टौ स्वातन्त्र्याभावेऽपि भोग मोक्षयोः स्वातन्त्र्यम् । सदेहत्व मदेहत्व मपितस्य स्वैच्छिक-मेवच इत्यादि निरूपितम् । तच्च चतुर्थ नवम व्याख्यानयो रन्त-र्भूतम् । तत्र अहंशिवः शिवोऽहंच इत्यादिना मुक्तस्य ब्रह्मणः अभिन्नत्व निरूपणात् । अथवा दास एवाहं इत्यादिना उपासना-याश्च सम्यङ्निरूपितत्वात् । "नमोऽहंच शिवायोऽहं" इत्यादिना

नवम व्याख्याने जीवस्य अनादिब्रह्म रूपत्व निरूपणात् ॥ ॐ नमःशिवाय ॥४॥

चतुर्थ अध्यायके चतुर्थ पाद में, मुक्तिरूप वस्तुका पुरातनत्व, मुक्तका ब्रह्मसे अभिन्नत्व मुक्त स्वरूपभूत ब्रह्मका एक साथ ही सविशेष निर्विशेषत्व, अर्चिः आदि मार्गसे ब्रह्मलोक प्राप्त उपासक का, भोगवस्तुओं की सृष्टि में मानस संकल्प का ही कारणत्व-देहान्तर की सृष्टि इच्छा से ही कर सकता है। जगत् सृष्टि में स्वतन्त्रता न रहने पर भी भोग मोक्ष की स्वतन्त्रता। इच्छा ही से सदेहत्व अदेहत्व इत्यादि कहा गया है वह सब चतुर्थ और नवम व्याख्यान में आगया। उसमें "अहंशिवः शिवोऽहंच" इत्यादि से मुक्तका और ब्रह्मका अभिन्नत्वनिरूपणसे अथवा दास एवाहं इत्यादि से उपासना का सम्यक् निरूपण करने से "नमोऽहंच शिवायोहं" इत्यादि से नवम व्याख्यान में-जीवका अनादि ब्रह्म रूपत्व निरूपण करने से ॥ ॐ नमःशिवाय ॥४॥

इयं सारस्वतापत्य हरिनामाख्य शर्म्मणा ॥ पंचाक्षरी मन्त्र भाष्य व्याख्याप्रोक्तासुबोधिनी ॥ शरेषु नवचन्द्राब्दे सप्तम्यां सोमवासरे ॥ मार्गशीर्षे शुक्लपक्षे व्याख्यानंपूर्त्तिमभ्यगात् ॥

शमस्तु

॥ ॐ नमःशिवाय ॥

सारस्वतसन्तान हरिनाम शर्म्मा ने यह पंचाक्षरी मन्त्र भाष्य की सुबोधिनी व्याख्या कही। सम्वत् १६५५ मार्गशीर्ष शुक्ला ७मी सोमवार को यह सम्पूर्ण हुआ॥

शमस्तु

॥ ॐ नमःशिवाय॥

नारायण स्वरूपाय गुरवे मोक्षदायिने ॥
आभासिकाय यतये नमः सोमाश्रमायवै ॥१॥
खेमका विश्वनाथेन प्रार्थितेन सदेशिकः ॥
अग्निष्वात्तेन भृत्येन कारया मास भाषया ॥२॥
नमस्तस्मै भगवते देशिकेन्द्राय दण्डिने ॥
सोमाश्रमाभिधानाय यतयेवीतरागिणे ॥३॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

"इस पुस्तक के प्रकाशित करने में श्री गंगा प्रसाद जी बिरला, ने ६ रीम कागज़ ओरिएन्ट पेपर मिल से तिहाई मूल्य पर देकर जो सहयोग प्रदान दिया है, उसके लिए उन्हें धन्यवाद ।"

—प्रकाशक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१	८	निध्याता	निर्ध्याता
३	१८	नकर्माणा	नकर्म्मणा
४	२	षट्ट	पट्ट
५	१६	त्रिर्गुणं	ञ्निर्गुणं
६	८	वाञ्छैश्च	वाञ्छँश्च
६	१०	यद	यद्
६	१	अद्दष्टपुरूशाय	अद्दष्टपुरूषाय
१२	४	पदार्थमुक्ता	पदार्थमुत्का
१२	१६	व्याख्याओं का वर्णन	व्याख्याओं का भिन्न२ अर्थों का वर्णन
१३	१६	अध्यस्तो पाद्ये स्त्यागात्	अध्यस्तोपाधेस्त्यागात्
१३	२०	प्रत्यगाभिन्ना	प्रत्यगभिन्ना
१४	१२	भोग्यानी	भोग्यानां
१४	१४	अनित्य	अनित्यत्व
१६	२	भासमानमयित्यजामि	भासमानमपित्यजामि
१६	६	तत्मृतिमपित्यजामि	तत्स्मृतिमपित्यजामि
१६	१०	त्वक्ता	त्यक्त्वा
१६	१२	सत्यज्ञानान्धत्म	सत्यज्ञानानन्दात्म
१८	१७	ऐकोपि	एकोपि
१६	१०	यश	पन्न

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१६	१७	दैत्यादियुक्तव्यक्ति	दैन्यादियुक्तव्यक्ति
२१	४	निपिध्यते	निषिध्यते
२२	३	नासमानस्य	भासमानस्य
२२	१४	में "मस्यति"	"मस्यति"
२४	१३	नमःशब्दार्थमुक्ता	नमःशब्दार्थमुक्त्वा
२४	१६	चतुर्दशलोकात्मकस्य	चतुर्दशलोकात्मकस्य
२५	४	चतुर्द्दशलोकात्मक	चतुर्दशलोकात्मक
२८	१३	जड़ायः	जड़ायाः
२८	१४	प्रकृतेः	प्रकृते
२८	१७	प्रकृतिका और स्वरूप का भी	प्रकृत में वर्तमान प्रकरण में स्वरूप का ही
२६	१५	तादात्म्य	तादात्म्य ऐक्यरूप
२६	१६	अमनम्	नमनम्
३०	१	मुक्ता	मुक्त्वा
३०	१०	हो	है
३२	३	अहंब्रह्मस्मि	अहंब्रह्मास्मि
३४	३	वाञ्छैश्च	वाञ्छँश्च
३४	१८	यत्रफलादिकं	पत्रफलादिकं
३५	११	मन्त्रार्थतत्त्वज्ञेः	मन्त्रार्थतत्त्वज्ञैः
३६	६	किया	किया है ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
३८	१	हृदाचिवेकत्याबुन्ध्यामन्त्रेण	हृदाविवेकवत्याबुध्या मन्त्रेण
३८	५	तथार्थतयाज्ञात्वा	यथार्थतयाज्ञात्वा
४०	२	प्रयोःस्यात्	प्रयोगःस्यात्
४२	५	भाव	भावे
४२	१५	वनि	वान
४३	१६	उक्ता	उक्त्वा
४६	१८	मासिमानगोचरत्वायादनेन	मासिमानगोचरत्वापादनेन
४७	१	अविर्भूतं	आविर्भूतं
४८	२	तत्त्वन्निषिध्यते	तत्तन्निषिध्यते
४८	१	ननन्तरमवाह्यम	मनन्तरमवाह्यम्
४९	६	इनमोनमः	अनमोनमः
४९	८	सर्वश्रेयो	सर्वाश्रयो
५०	११	उक्ता	उक्त्वा
५२	२२	पूर्णविध	पूर्णविध
५३	१६	इदन्ताविषये	इदन्ताविषयम्
५६	१३	अभिज्ञेः	अभिज्ञैः
५७	३	आनन्द्रप्रदाय	आनन्दप्रदाय
५९	७	परिपूर्णरूपञ्च	परिपूर्णरूपश्च
५९	११	नमः	नमाः
५९	१४	हृदभूषां	हृद्भूषां

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
६०	१६	ब्रह्ममें	ब्रह्मसे
६१	१	निरूपतिः	निरूपितः
६३	४	यस्यदानन्द०	यस्मादानन्द०
६३	१६	तातार्येणैव	तात्पर्येणैव
६४	१०	तदाना	तद्वाना०
६४	१२	तत्पर	तत्पराः
६५	७	कप्येपत्ति	त्वायोपपत्ति
६५	७	असं इतैकारात्मकस्य	असंहतैकारत्मकस्य
६६	११	ब्रह्मणश्च	ब्रह्मणश्च
६६	१४	कारणे	कारणं
६६	१७	दित्यन्तऽतित्वा	दीत्यन्तर्गता
६६	२	अङ्गत्व	असङ्गत्व
७२	४	सस्यादिमें	इत्यादिमे
७२	१५	ब्रह्मणौ	ब्रह्मणो
७३	६	स्वच्छिकत्वम्	स्वेच्छिकत्वम्
७४	२	विधायाः	विद्यायाः
७५	३	जीवने	जीवेन
७५	१६	मर्ध्व	मूर्ध्व
७६	३	स्वरूपिणश्च	स्वरूपिणश्च
७६	८	प्रार्थितेन	प्रार्थितो वै

সংগে পাশাপাশি নির্মিত হইবে। রেল লাইন খালের পশ্চিম তীর বরাবর নির্মিত হইবে।

শ্রী এ সি গুহ :—তাহা হইলে কি এই কথা বুঝিতে হইবে যে, আমাদিগকে সড়কের উপর নির্ভর করিয়াই চলিতে হইবে এবং আমরা উপযুক্ত রেলপথ পাইব না?

শ্রীরামস্বামী :—ইহার অর্থ এইরূপ নহে; কিন্তু সাময়িকভাবে ইহাকেই সমাধান বলিয়া মনে হইতেছে।

চলন্ত ট্রেণে চুরি ডাকাতি

লোকসভার বর্তমান অধিবেশনেই চলন্ত ট্রেণে চুরি ডাকাতি নিবারণের প্রশ্নটি আলোচিত হইবে বলিয়া আশা করা যাইতেছে। অধ্যক্ষ শ্রীঅনন্তশয়নম্ আয়েঙ্গার এই প্রশ্নটি সম্পর্কে আলোচনা করিবার পরামর্শ দেন। রেলমন্ত্রী শ্রীজগজীবন রাম এই পরামর্শ গ্রহণ করেন। রেল ষ্টেশন এবং চলন্ত ট্রেণগুলিতে যে সমস্ত চুরি ডাকাতি হইয়া থাকে তৎসম্পর্কে ইহার পূর্বে লোকসভায় বহু প্রশ্ন করা হইয়াছিল।

সম্প্রতি মাদ্রাজের নিকটে কোদম-বাক্কায় একটি সশস্ত্র দস্যুদল একখানি বৈদ্যুতিক ট্রেণ আটক করিয়া কয়েকজন যাত্রীর অর্থাদি অপহরণ করে এবং পরে ষ্টেশনের একজন কর্মচারীকে ছুরিকাঘাত

মহিলা যাত্রিগণ এ... সেই সমস্ত গাড়ী... রাখিবার জন্য গা... টিকেট চেকারদিগ... হইয়াছে। মালগাড়ী... যে সমস্ত ব্যবস্থা... তাহাও বিবৃত কর...
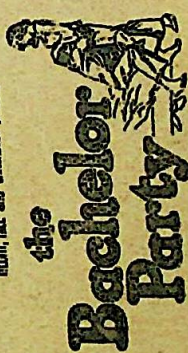
টেলিফোন

যানবাহন এ... বিভাগের মন্ত্রী শ্রী... লোকসভায় বলেন... পাব্লিক টেলিফোন... করার জন্য বর্তমানে... আদায় করা হয়... বাড়াইয়া ১৫ নয়া... গবর্ণমেণ্ট প্রস্তাব...

শ্রী এন সি ...র উত্তরে তিনি বলেন... যাহাতে দর্শমিক ... টেলিফোন ব্যবহার... তদুদ্দেশ্যে আগামী... টেলিফোন মেশিনের... পরিবর্তন সাধন ক...

অতিরিক্ত প্রশ্নে... বলেন যে, টেলিফো... জন্য গবর্ণমেণ্ট... আছে। এইজন্য... ফোনের চার্জ...